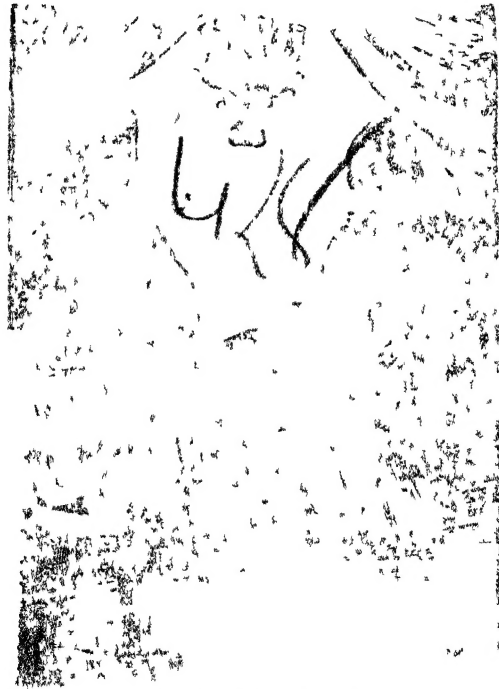


૯૩૦૩

આ રીડા આ શરૂ

પિત્તારિકા-આરીડ.



## बालबोध हरफ उरदु जवान.

हदीये तुलमुल्लेमीन याने	सोरे मा तम	०-३-०
जरूरीयातेदीन ०-८-०	फरीयाद नामा	०-१-०
शहीदे कर बला ०-८-०	शादी नामा	०-१-०
होफेजुल इस्लाम ०-६-०	वफात नामा	०-१-०
जंगनामा जैतुन ०-४-०	मोलुद गुलजार	
इन्दरसभा बातसवीर ०-३-०	जमान	०-६-०
किस्सा लैला मजनू	पारे अम्मायतस	
बातसवीर ०-४-०	शाआलुन	०-३-०
अहेरे इदक बातसवीर ०-८-०	जोते जवाना	०-२-०
हुजुल इस्लाम ०-२-०	बहार जवाना	०-२-०
नुर नामा ०-२-०	नष्ट बहार जमान	०-२-०
शाहादत नामा ०-२-०	फिराके जाना	०-२-०
सखायत नामा ०-२-०	गुलसन बहार	०-२-०
सक्रानत नामा ०-२-०	बहार गुलसन	०-२-०
कि. हलीमावाइका ०-२-०	किस्सा तोता मैना	१-०-०
	किस्सा हातम ताई	१-०-०

## जरूरी इत्तला.

खरीददारों को कीताबें मगते वक़्त अपना पुरा पन्ना याने नाम-मुकाम-पेष्ट और उरदुमे हो या गुजराती या हिंदीमे हो या इंग्रजीमे हो साफ़ लीखना चाहिये खत साफ़ न लीखनेसे उस खतका माल या जवाब नहीं भेजा जाता है. और १ रु. से कम का बी. पी. किसी को भेजा नहीं जाता।

**हुसेन मीरझां बुकसेलर ओर पब्लीशर**

करी रोड मुंबई पोस्ट नं० १३

# ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ ગુજરાતી કૉપીરાઈટ વિભાગ ]

અનુક્રમાંક ૧૩૦૩ વર્ગીક

પુસ્તકનું નામ પિયા. ૨૧૩/ ૫.૨૧૩

વિષય ૬૪૬૮:૩ ૪૧૮

# पियारिका आशिक.

पहला भाग.

उलझतका नयन मज है डे हो पोली वेकरा ।  
दोनों तरफ हो आग परापर लगी दुर्ग ॥

गाविजन कोश परशर जैसा न होगा जिसनें अक्षीगढका नाम न सुनाहो, येहशहर उन शहरों में शुमार कीया जाता है जिन्होंने सौ परस डे अन्दर ही तरकडी की है हम आन नाजरीनका धरसी शहर की सैर कराना चाहते हैं धरदि एक मोहल्ले में एक शान्दार भकान बनाहुवा है उसके एक पहल्लु में एक भरदाना कमरा बना हुया है उसकी मौजुनीयत मदी शैकीन आवजहा होनेका सम्भूत देरही है कमरे के समानै वावे पराम्दा में यन्द अशपास की नशिस्त है जिनकी शक्त व सूरत देखने सै माखूमहोता है डे धनमें सै किसी की उम्र बीस पाछिस साव सै न्यादां नहीं है अदके जिस की तरफ मदी होने का शुमान होता है उसनें तो अपनी अहद शपथ में कदम रण्णां है क्योंकि अपनी प्रप

સુરત ચેહરે પર સખ્ખ બર આમદ હોના શુદ્ધરૂ હૂવા હૈ ઈસ તરહ ગુફતગૂ કા ખાખર ગર્મ હૈ ।

એક—રિયાજ હુસૈન સાહબ આજ શખ્કો આખ જલ્લીતશરીફ લેઆના જરા હરમોનિયમ સે તખીયત બહેલાઈયે તમામ દિન ઈસ્કૂલ કી મોખ્ખહત હી મેં ગુજરતા હૈ ॥

રિયાજ હુસૈન— બહોત અચ્છા મેં ખાના ખાકર ફૈરન હી આખજીંગા, હાં આજ કિતાબ વગૈરા તો કુછ દેખની હી નહીં હૈ મુઝકો બી કૈઈ દિન ગુજર ગએ હૈ રાત દિન કિતાબહી જરે નજરરહીહૈ આજ ખુદા ખુદા કરકૈ માસ્ટર સાહબનૈ ઈમતહન ખતમ કર દિયા ।

મુનવર અલી—( તીસરે સાહબ ) બાઈ હાં આજ જરૂર આહિયે, ચૂકી કિસી આકિલ કા કૌલ હૈ “રાગ રૂહ કી ગિજા હૈ” લિહાજ આજ દિમાગ કો અરામ મિલા હૈ જરા તકરીહ સૈ દુરસ્ત કરના આહિયે મગર ખલીલ અહમદ ( પહલે સાહબ ) આજ તો હમ રિયાજ હુસૈન સૈ કુછ જરૂર સુનેગે ચૂકિ બહોત દિન ગુજર ચુકે હૈ બસ વહી ગબલ સુના દેના ॥

દિલહમનૈ ઉસ સનમકોદિયા ફિરકિસી કો ક્યા) યેહ બહોત હી બલી માલૂમ હોતીહૈ તુમ્હારે મુહ સે ખલીલ અહમદ—હાં યેય ગબલ ગબલ કી.... ( લપક કર દર્વાજે પર ખડા હોખતા હે )

રિયાજ હુસૈન—( દિલ થામે હુયે વાપિસ આતા દેખ કર ક્યાં ક્યા હૈ ! ડાન થા,

ખલીલ—કુછ નહીં .....ઉક્ર ..... (કહ કર દમથામ લેતા હૈ)

રિયાજ—(હંડતે હુયે) ક્યા હૈ, દેખું તૌ ક્યા હૈ (બાહર દેખતે હુયે) ફિર આપકો ક્યા વો બરહી હૈ કિસીકા રાસ્તા ખાન્દ કરતે હો।

ખલીલ—અરે સાહબ ક્યો છેડતે હો વદલાહ તુમને દેખા નહીં સચ કહેતાહૂં “હાય ગજબ કરગઈ,, મેંને તો ઈસ પરી શુમાઈલ કો આજહી દેખા હૈ ઈસ સે પેશતર કબી નહીં દેખા ન માલૂમ કમ્બખ્ત ઉસ શોખ ચિતવન મેં ક્યા અસર થા દિલ ખીંચ કર ચલા ગયા અબ નમાલૂમ ઇસકા અંબખ ક્યા હોગા ॥

કદમ અબ ઈશક કે દરયા મેં ડાલા ॥

તવકુલત આલા અદલાહ તાંલા ।

મુનવ્વર અલી—ભાઈ હસીન તો ગજબ ડી હૈ વોહી સખ્જ સાડી વાલી હોગી, જીસકી સૂરતદેખ કર બેસાખ્તા વોહ શૈર જખાન સૈ નિકલ જતા હૈ

પુદાયા કેસી કેસી સૂરતેં તૂને બનાઈ હૈ ॥

કે હર સૂરત કલેજે સૈ લગા લેને કે કાબિલહૈ ॥

ખલીલ—વોહી બલિમ હૈ જો કે મેરે દિલ કો અપની કશિર મિકનાતીસ મૈ ખીંચ કર લેગઈ ઔર બર્ક તખસુમ ગિરા કર ખાક શ્યાહ બના ગઈ.

सेर.

तड़गो तीर जहिर न था कुछ पास कालिल डे,  
 धल्लाही फिर जे दिलपर ताक मारा तो क्या भाया,  
 रियाज—तो क्या सय मुय उसपर लोट गये और राह  
 धरकमें कदम बढ़ा दिया मैने तो मजक तसव्वार कर रहा था  
 मगर अलील साहज याद रमिये ॥

येह धरक वो है डे पत्थर डो दम मैं व्याप करै,  
 करै धरक कि ल स डो जुदा पराज करै,

अक्सरांन हजरत तारीकत किताबमें मुलाहिज की होगी  
 मियां कलीस डो अयाडे छनवाई मिस्टर दरहाद डे शात कैसा  
 सलूक किया—यशमये शीरी निकाला जन तक देदी मगर—गोयर  
 मकसद मिला फिरभी न कुछ दरहाद डो दुसरै व्याप मुहम्मदिन  
 और वो काम हिनूदसै धिस का नतीज इसवाई और बदनामी  
 तक ली महदुद होगा ।

अलील—अप न्याहै नासह न अनिये ।

येह कहां डी दास्तीहै डे अने है दास्त नासह ।

डोई खोरा साज होता डोई गम गुसार होता ॥

जय दिलसै पहलू निकल युका हो तो डान नसीहत सुनै  
 और डान असल करे:—

रिवाज—मैने तो सिई अंजाम से अगाह डीया है अदाल  
 किसी डे—

मानों न मानों जाने जहाँ अभ्युत्थार है ।

हम नेको पद दुन्दुभे को समझाये जाते हैं ॥

और हम हरतह शरीर हाल है मोड़ के मुन्तज़र रहो ।  
येह हम ने ताउ लिया वो यहीं की है कभी न कभी तो  
रसाई हो जय्येगी—

पत्नील—वाहकेली भूष कही यहाँ एक मिनट एक साक्ष है  
अक्षोस में ली पाक शहरमें जाहताहूँ येहलीनही भाव  
म के उस गुलका किस यमन में धरहूँ और वो किसमाह  
की जगर पाराहूँ—

रियाज—में भूष जन्ताहूँ आपू लक्ष्मी नारायन की लउकी  
है अक्षर तुमनेली देखा होगा— भूषसूरत सै आदमी है  
किस्ती कहर निरम ली है दौसो इपया तनप्याह परकिस्ती  
रियासत में मुलाजमहूँ आजतो शायद यंहीं भौण्ड है—

अरुण अथ आप आराम कीज्ये देपो क्या तरकीब  
निकासत हूँ यारो की कराभाते देपो अथ स्कूलसे आऊँ हु अ  
अरसा हुआहूँ अथ मकान पर हो आवें रातको पात होगी—  
मुनव्वर व रियाज यल दिये और पत्नील तनछाई में इये  
यार का कौटू लेता रहा—नाजरीन न समझे होगे— पत्नील  
अहमद कुछ आज ही का आशिक नहीहूँ पदके छोटी छत्र  
में धसके साथ भेजा है और जय हीसे धनमें कुछ आपसमें



उलझत है इसकी वजह येही है कि पत्नील अहमद के वालिद  
 भायू लक्ष्मी नरायन के मकान के सामने रहते थे (जसका  
 तकरीबन ढाघ तीन साल के होगये हैं) मगर अप्पतक दानोंमें  
 उलझतकी शमा रेशन है और अप्प जमाने शम्पाय की तेज  
 हवाने इसका पकका दिया है धन ढाघ तीन साल में धन  
 दोनों की कुछ से कुछ हालत होगई हुस्न शम्पाय से डान  
 बाकिइ नहीं--मगर पत्नीलने आज तक किसी तरह पर  
 बहिर न किया पकके दिल ही दिलमें धरकके शैलोंका परदारत  
 करतारहा आज धत्तशक से येसाप्तगी की हालतमें जप सप  
 पर धनहार होगया तो इसने नये पहलूसे दस्तोसि मद्ध  
 आही और अपनेका गिरझतार उलझत का जताया:--

## दुसरा भाग.

शेर--जन्मे मोहपुण्यत का यमनमें पूछवो गुलसे ।  
 के दामानें तहम्मुल याक है दर्याद पुलपुल से ॥

सुसराल का पत

भायू लक्ष्मीनरायन साहय का मकान बी शहरके मामूली  
 मकानों से अरखेमें शुमार किया जाता है इसका पाला पाना  
 निहायत उम्दा वज्र का है सामने नक्षीस तारों के जंगले  
 लगाये गये हैं और काठ के मुनककश महाराजदार दर बनाये

गये हैं उनपर निहायत सकार्थ से सज्ज रंग डीया गया है  
महाराजोंमें निहायत पुरा मतलुबी के साथ उम्दा उम्दा धमले  
रहे गये हैं जो धनकी पुण्य सूरती को दुपाला कर रहे है  
मकान के अंदरनी हिस्से में दालान है उस में साहज पाना  
आपू लक्ष्मीनारायन—प्यारी डी मा तुम ने वो भत देया जो  
प्यारी डी सुसराल से आया बगवती (प्यारी डी मां) नहीं  
मुझे मातुम तक नहीं—ज्यों ज्या लिपते हैं

लक्ष्मी नारायन—यम्मा—(नौकरनी) मेरे डाट के जय से  
वो भत लाना जरा धनकोबी दिपलाहुं देयायु किशोरीलाल  
(समधी) अय्य ज्या रंग लाये हैं—हमने पहलेही कहा था  
के धन लोगों से रिशत करना सरासर एक जगडे का मौल  
लैना है—यम्मा कैरन दौडी गधे और भत लाकर दे दिया  
आपू साहज डी आंखें गुस्से से मुर्भ होगध और भत को  
धिस तरह सुना ने लगे

॥ भत ॥

जनाय आपू लक्ष्मी नारायन साहज—तसखीमात आपको  
धत्तलायन कलमी डीया जाता है अप्रसोस पार पार आपको  
तहरीर डीया के लडकी का गौना करेहो मगर आपने न डीया  
अय्य लडके के भत से मातुम हुआ के उसने शादी दूसरी  
करली लडका जवानुव उभ्रया ज्या करता गां उसने मेरी

ખીલા રજમંદી એસા ક્રિયા-- મગર વો મુઝેકો સદહા ખુતૂત મેં તદરીર કર ચુકા થા કે ખુલા લિયા જવૈ--ખૈરજો કુછ હૂઆ સો હૂઆ અગર આપ પંદ્રહ જુનમે કે અંદર યહાં પોંહ્યાવે તો ખૈર વરના હમ જુમમેદાર નહીં હૈ ફક્ત

કિશોરી લાલ

લક્ષ્મી નરાયન--અખ ક્યા કીયાજઅ તુમ લોગોં કે કહને મેં મેં અકર ખજુજ તુકસાન કુછ નહીં--

છોટી ઉમ્રમેં શાદી કરદેનેકા ક્યા નતીજ હૂઆ અખ ઈસ હાલત મેં ભેજના ખહેતર હૈ આર મેં ભેજુંગા હરગિજ નહીં--

ભગવતી--અખમેં ક્યા કરું ઇન લોગોં કે અંદર કે હાલ સે આગાહ નથી ખૈર જો કુછ હૂઆ વો અપને દિલમે સમજતે હી ક્યા હૈ આર યેહ જો ઉન્હોનેં લિખ્યા હૈ કે મેરી ખિલા રજમંદી ખિલકુલ ગલત હૈ યેહ મુમકિન હૈ હર ગિજ નહીં યેહ એક તરકીબ હૈ યેહસખ ઈનકીહી કરતૂતહૈ વો લડકા બડા સીધા હૈ વો યેહ સમજતેહૈ કે પ્યારી કો રોટી કપડા ન મિલેગા પરમેશ્વર દેને વાલાહૈ યહાં ઈતના મૌજુદ હૈ કે પ્યારી કે અલાવા આર ચારકો ખિલા સકતે હૈ યેહ કુછ જરૂરત ઈસકે જવાબ દેને કી નહીં હૈ વો દો બહૂએં લાકર ખિલાલાવેં હમ પ્યારી કો હરગિજ ન ભેજેંગે ભલા હમ અખ ઉનકે લિખને પર કિસ તરહ ભેજદે--ખચ્ચી થી આર અખ ભી કાંન બડી

हैं पुरे चौबट्ट की भी नहीहुई कलड़ी मैंने जन्म पत्री देखी थी-- कहीं आसाठ में नकर साव पुरा होगा।

लक्ष्मी नरायन--में हरगिज ऐसी हालतमें लेज नहीं सकता और लेजना कैसा डे दैने भी आया हो, उनका मतलब येह है--उनकी गरज होगी तो पुढ कर अंयगे गोया उनहोंने हम डा मज्जुर जता है हमको जइरत ज्या है डेई गुडा तो है नही कि लट्टी डा ड्रेक आये होमोज प्यारी की हरतरह आतिर व हिलजेई रक्यो वो किसी किरम का प्यास हिलमें न लाये पायुसाहय येह कहते हुये मरदाने कमरे में अत्ते गये-- अय्य हम लगवती डा छोड कर बिपर वाते कमरे में अत्ते हैं जहां प्यारी अपनी हभजेलिये में बैठी है

रामदेई--अहन अय्य तुमभी तुमहारी सुसराव से भी भुलावे का भत आगया अय्य यहां हो घड़ी बैठ कर हिल पुश करलैने का वसीला भी जता रहेगा।

गौमती--हां अहन येह तो यही भगर ईन्है ज्या है येह वहां डे मजेमें हम लोगोंडा बूल अयेगी हम ईनका याद करते रहेंगे

रामदेई--अहन कहीं ऐसा न करना कभी हो भोल भत से तो जइर याद कर लिया करना ऐसा नहो कि वहां डे अश डे आगे अर्षों साथ पढने और भेलने वालियों की उलझत

को भात में भिजादो शरमाती क्यों हो बोसती क्यों नहीं है  
दिलमें तो जहोत पुश हो (अट से सीने पर हाथ रख कर)  
दृष्टुं दिलको पुशी के भारे क्या हाल है प्यारी (बिगड कर) यलो  
रहनेको में ऐसी दिलगी नहीं चाहती हरवक्त ऐसीपाते  
अच्छीनहीं लगतीहूँ येहू कहें कर ईरन उसकी आंभों से  
आंसू निकल आये

रामदेव—जहन गोमती यलो आज भिन्न अछा नहीं  
जरा जरा सी भात पर आंसुं जहाये देती हूँ परमेश्वर  
जने इसदिन सै धनकी हालत कैसी हो गध है उस दिनसे  
हम मन्दर से दरशन कर के आये हें येहू ऐसी ही हरवक्त  
पडी रहती है और जरा जरा सी भात पर बिगड जाती है  
कैसी ही पुशी की भात क्यों नहो मुसकराहट तक लयों पर  
नहीं आता वोही बसल है आगे आती थी हाल दिलपे हसी  
किसी भात पर नहीं आती ॥ येहू कहती दुर्घ दानों यकी  
गध अगर प्यारी नै तबज्ज नकी धिस वक्त धनका यले जाना  
हमारी प्यारी के वास्ते गोया एक जलाका टलना हुआ क्यों  
के धनके यले जने से एक भुतसंवर पिलवत में उसके  
अलख था अज पदस्तूर सायिक सुरत सामने आई ॥

प्यारी—हां तो क्या येहू सय है कि भुजसे दिली उन्सीयतहै  
भुज कोतो यकीन नहीं आता वो उम् और थी, जज

ਕੀ ਉਲਫ਼ਤ ਅਘ ਤਕ ਤੁਝੋਕਾ ਕਧਾ ਰਹੀ ਛੋਗੀ ਛਾਧ ਵੇ ਅਧਧਨੇ  
 ਕੀ ਉਮ੍ਹ ਕੁਛਾਂ ਘਵਾਯੋ ਘਯਾਲ ਛੋਗਧ ਕਧਾ ਤੁਝੋਕਾ ਧੇਛ ਮਾਲੁਮ  
 ਹੈ ਤੇ ਮੇਰੇ ਦਿਲਮੇਂ ਪਹੁੰਚੇ ਸੈ ਅਫਰਾਜ ਅਫਾ ਮੋਹਘਘਤਪੈਦਾ ਛੋਗਧ  
 ਹੈ ਕਧਾ ਮੇਰੀ ਮੋਹਘਘ ਕਾ ਮੁਕਾਘਲਾ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੈ। ਅਗਰ ਕਰ  
 ਸਕਤੇ ਹੈ। ਤੋ ਕਧਾ ਅਘ ਤਕ ਧੂੰ ਛੀਂ ਆਮੋਸ਼ੀ ਰਹੁਤੀ ਕੁਛੀਂ  
 ਵੋਛੀ ਮਸਲ ਤੋ ਨਹੀਂ ਛੁਧ ਗਰ ਗਧੇ ਤੇ ਕਾਨਮੇਂ ਕਛੇਛੁੰ ਤੇ ਛੁੰ  
 ਤੁਝਪਰ ਪ੍ਰਿਦਾ ਹੈ ਧਕੀਨ ਕਾਮਿਲ ਕਿ ਵੋਛੀ ਘੇਤ ਆਨਾ ਓਡਦੇ  
 ਘੋਵੋ। ਆਜ ਧੇਛ ਆਮੋਸ਼ੀ ਹੈ ਅਘ ਕੈਸੀ ਆਫ਼ਤ ਛੋਗਧ ਹੈ  
 ਤੋ ਐਕਸ਼ੈਰ ਕਾ ਜਘਾਘ ਆਰ ਸ਼ੇਰੇਮੇਂ ਦੀਧਾ ਕਰਤੇ ਥੇ ਆਜ ਵੇ।  
 ਸ਼ੈਰ ਗੋਧ ਕਧਾ ਛੋਗਧ ਮਾਂਤ ਵੇਦੀ ਧਾ ਘੋਦੀ, ਪਰ ਵੁਟੀ ਅਘ ਨ  
 ਅਫ਼ਸਨਾ (ਐਕਾ ਐਕ ਬਾਂਕ ਕਰ) ਹੈਂ ਮੇਂ ਕਿਸ ਸੈ ਆਤੇ ਕਰ ਰਹੀ  
 ਛੁੰ ਧਛਾਂ ਕੈਨ ਹੈ ਜੇ ਜਵਾਘ ਵੇ ਡਾਧ ਸੁਨੈ ਤੋ ਮੁਝੇ ਕਧਾ ਕਛੈ  
 ਅਰੇ ਮੇਰੇ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਮੁਝੇ ਕਧਾ ਛੋਗਧਾ ਤੇ ਮੁਝੇ ਅਪਨੀ ਝੁਲਵਾਧ  
 ਕਾ ਲੀ ਘਯਾਲ ਨਹੀਂ, ਐ ਕਘਘ ਪਤ ਉਲਫ਼ਤ ਤੁ ਕਧਾ ਘੀਜ ਹੈ  
 ਤੇ ਆਫ਼ਮੀਡਾ ਘਿਲਕੁਲ ਪਾਗਲ ਆਰ ਅਪਤੀ ਅਨਾ ਵੇਦੀਛੇ ਸਾਮਨੇ  
 ਐਕ ਫ਼ਰਾਜ਼ ਤਸਵੀਰ ਲਾਕਰ ਅਤੀ ਕਰ ਵੇਦੀ ਹੈ ਤੇਰੇ ਤੁਪਤ ਮੇਂ  
 ਕੁਲੀ ਸਮਰ ਆਤਾਛੈ ਧਾਮਿਲਲ ਸਮਰਕੇ ਛਮੇਸ਼ਾ ਐ ਸਮਰ ਰਹੁਤਾ ਹੈ  
 ਸ਼ਾਧਦ ਤੁ ਮੁਝੋਕਾ ਐ ਸਾਛੀ ਜਵਾਘ ਵੇਦੀ ਨਜ਼ਰ ਆਤੀ ਹੈ

ਸੋਰ—ਮੈਂ ਵੇ ਨਾਪਦੇ ਐ ਸਮਰ ਛੁੰ ਜੇ ਪ੍ਰਸੂ ਤੋ ਫ਼ਲ ਨਾ ਆਐ ਐਧਾਂ ਕੁ  
 ਅਘਤਕਫ਼ਲਤੋ ਕਧਾਫ਼ਲ ਤਕਕਾਛੀ ਨਿਸ਼ਾਨਨਹੀਂ ਮਗਰ ਕੁਛੀ ਐਸਾ

नकरना औ परमेश्वर मेरी एसि प्रार्थना को कभूत करना और मुझ को लक्षण यास आशाना करना—यवो येह अतर हुवा एसि अत के आनने से अक अटका तो मिटाया मगर कही औसा न हो के फिर मुझे लेजने की राय होअये.....नहीं क्यों आके लाजा (वालिद) ने तो अडा जेर देकर येह आत कही है कि हम हरगिज न लेजगे पेर हाथ कोई धतना तक बी तो नहीं के असको अपना हमराज बनाजि और अपने दिव का माजरा सुनागे ॥

## तीसरा आध.

जगर में चुटकिया लेती है हर तरफे दुगाभेरी  
कहा सै लायेगा कसिद दहन मेरा जग्या मेरी  
क्या तदवीर की

रात का वो, हिस्सा असको सुअह सादिक कहते हैं कुछ अजग्य सोझाना वक्तहै आटे सहरी के ठंडे ठंडे ओके कुछ एसि अन्दाज सै चलते हैं के वो मरीज बी जे तमाम शपशिट कर्षसेकरा हते रहे है और पलक सै पलक नहीं लगा है एसि वक्त सो गये हैं मगर मरीजन ईशक पर धनका बी कुछ असर नहीं उनको नीद कहा अकौलशेर,

असकादिव दिवद्वारमें हो असको कय आतीहै नीद  
करवटे लेते साक्षे उठ जाती है नीद ॥

'ਓ' ਵੇਖਿਏਨਾ ਸਾਮਨੇ ਹਮਾਰਾ ਦਿਲ ਹੀਰੋ ਅਵੀਲ ਮਿਲੇ ਮਾਛੀ  
 ਓ ਆਪ ਮਸੇਰੀ 'ਪਰ' ਤੜਪ ਰਹਾ ਹੈ 'ਓ' ਕਰਵਟ ਅਵੀਲ ਆਰ  
 ਆਦਰ ਸੇ ਮੁੱਢ ਘੋਲ ਕਰ ਕੁਝ ਕਢੇਨੇ ਲਗਾ, ਛਾਪ ਅਵਲਾ ਕਯਾ ਕਰੇ  
 ਆਪ ਦੀ ਸ਼ਾਤ ਭੀ ਪਛਾਤ ਹੈ ਤੇ ਕਾਟੈ ਨਹੀਂ ਕੱਟੀ,  
 ਯਾ ਓਲਾਹੀ ਸਾਧੈ ਦੁਰਕਤ ਦੀ ਸਹਰ ਹੈ ਤੇ ਨਹੀਂ,,

ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ.....ਟਨ ਅਵੇ। ਓ ਅਯਗਏ  
 ਸੁਪਣੁ ਛੋਗਓ, ਭੁੱਕਰ ਲਾਂਭੇਡਾ ਗੁਲ ਦੀਆ ਕਾਮ ਨੜੀਰੀ ਸੈ ਫਾਰਿਗ  
 ਛੋਕਰ ਐਠੇਹੀ ਥੈ ਛੇ--

ਅਰਬੀ ਟਰਫ਼ ਦਿਨ ਨਿਕਲ ਆਯਾ ਨਾਵਿਲ ਛਾਪ ਮੇਂ ਹੈ ਮਗਰ  
 ਨਿਗਾਹ ਨਮੀਨ 'ਪਰ' ਹੈ ਆਰ ਅਪਨੇ ਕਿਸੀ ਅਪਾਲਮੈਂ ਮੁਸਤਾਫ਼ਿ ਹੈ--  
 ਰਿਆਜ਼ ਹੁਸੈਨ ਸਰ 'ਪਰ' ਅਤੇ ਕੁਝ ਰਹੇ ਹੈ--ਕਹਿਏ ਹਜ਼ਰਤ ਕਯਾ  
 ਛਾਤਹੈ ਛੋਲੀ ਰੋਜ਼ ਮੇਂ ਯੇਹੁ ਛਾਤ ਅਨਾ ਲਿਆ--ਮਗਰ ਵਛਾਂ ਤੋਨ  
 ਹੰਸਤਾ ਹੈ ਗਾਯਾ ਲਾਲ ਲਖਮੀ ਨਰਾਯਨ ਤੇ ਆਵੇ ਆਨੇ 'ਪਰ' ਹੀ  
 ਮੈਨੂਫ਼ ਹੈ

ਰਿਨਾਜ਼ ਹੁਸੈਨ (ਆਨੂ ਛਿਲਾਕਰ) ਅਰੇ ਆਓ ਕਯਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ।  
 ਕੈਸਾ ਝਿਜਕ ਹੈ ਧੰਦਾ ਭਰਸੇ ਅਤੇ ਹੈ ਜੋ ਅਪ ਤਕ ਅਪਰ ਨਦਾਰਤ  
 ਅਵੀਲ (ਥੈਕ ਕਰ) ਅਰਬ ਆਪ ਆਗਏ ਹਮਾਰੀ ਛਾਤ  
 ਕਯਾ ਪੁੱਛਤੇ ਹੋ--ਯੇਹੁਕ ਹੈ ਅਵਲਾਨ ਹੈ ਅਵਲਾ ਕਾ ,, ਪੁੱਛਤੇ  
 ਕਯਾ ਹੋ ਗਰੀਬਾਂ ਕਾ ਮਿਅਜ਼ । ਆਪ ਦੀ ਅਵਲਾਸੇ ਆਪ ਹੋ ਰੋਜ਼



ਸੇ ਕੁਛਾਂ ਰਹੇ ਰਿਆਜ—ਅਰੇ ਧਾਰ ਦੋ ਰੋਜ ਕਯੋਂ ਲਗਾਏ ਦੇਤੇਛੋ।  
ਸਿਰ੍ਹ ਕਲਹੀਂ ਤੋ ਕਯੋਂ ਕੇ ਵਾਲਿਦ ਸਾਹੁਧ ਧਰਗਯੇ ਦੁਕਾਨ ਪਰ  
ਐਠਨਾ ਪਡਾ।

ਅਲੀਲ—ਐਰ ਕਹਿਯੇ ਕਯਾ ਤਦਘੀਰ ਕੀ ? ਦੋਸਤ ਮੇਰਾ ਪੁਰਾ  
ਹਾਲ ਹੈ ਮੇਂਨਹੀਂ ਜਨਤਾ ਕੇ ਸੀਨੇ ਮੈਂ ਪਯਾਏ ਦੀਲਕੇ ਕਯਾ ਧੁਸ  
ਐਠਾਹੈ ਕੇ ਐਕ ਲਹੁਮਾ ਐਨ ਨਹੀਂ ਅਛੋਤ ਕੁਛ ਈਸ ਆਲਾ ਕੇ  
ਦਿਲ ਸੇ ਟਾਲਤਾ ਹੁੰ ਮਗਰ ਨਾ ਕਾਮਯਾਬੀ।

ਰਿਆਜ—ਬਲਾ ਧਾਰਘਾਂ ਅਸ ਆਤ ਕਾ ਵਾਐਦਾ ਕਰੇ ਵੋ ਪੁਰਾ  
ਨਹੋ—ਮੈਨੇ ਵੀ ਉਸਕੀ ਕੁਛਾਰਨ ਕੋ ਡੈਰ ਪਰ ਬੇਠਾਯਾ ਹੈ ਜੇ ਆਸ  
ਵਹੀਂ ਪਰ ਪਾਨੀ ਭਰਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਬਿਸੇਸੇ ਦੇਕਰ ਰਾਹਪਰ ਲਾਯਾਹੁੰ  
ਧਾਰ ਅਤੇ ਗਯਾ ਕੀ ਐਰਤ ਹੈ ਬਲਨੇ ਮੈਂ ਤੋ ਪਤਾਂਗ ਕੀ ਤਰਹ  
ਉਡਤੀ ਹੈ ਤੁਮ੍ਹਾਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੇ ਆਤੋ ਮੈਂ ਐਸਾ ਮਾਂਤਾ ਹੈ ਕਿ  
ਉਸਕੀ ਹਰ ਐਕ ਆਤ ਕੋ ਕਾਟ ਕਾਟ ਦੇ

ਅਲੀਲ—ਐਰ ਧਾਰਘੇ ਧੁਦਾ ਈਸ ਵਸਤ ਅਵੈ ਅੰਦੀਕਾ ਰਹਨੇ ਦੋ  
ਯੇਹ ਬਾਂਬਲੇ ਲਗਾਨੇ ਲਾ ਵਸਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਸ ਰੋਜ ਵੋ ਹਮਕੋ  
ਉਸ ਕੇ ਹਾਤ ਕਾ ਪਾਨ ਪਿਲਾਵਾਦੋ ਤੋ ਹਮ ਉਸਕੋ ਸੁਰ੍ਹੰਝ ਜਨੇ  
ਐਰ ਜਘ ਯੇਹ ਤਾਰੀਕਾਤ ਦੁਰਸਤ ਦੋ ਅਧਤੁਮ ਜਲਦ ਅਤਲਾਐ  
ਵੋ ਕੁਛਾਂ ਹੈ

ਰਿਆਜ— ਅਧਤੋ ਆਤੀ ਹੋਗੀ ਉਸਨੇ ਈਸ ਵਸਤ ਆਨੇ ਕਾ  
ਵਾਐਦਾ ਕੀਯਾ ਹੈ ਤੁਮ ਅਤ ਲਿਘ ਰਘੋ ਅਿਸ ਮਿਦਲਾ ਕਰੋ ਈਨਸ਼ਾ  
ਅਦਲਾ ਦੇਘੋ ਕਯਾ ਅੰਜਮ ਅਐਰ ਹੋਤਾ ਹੈ

ਘੜੀਲ-ਤੁਮਕੋ ਮਨਕ ਛੀ ਸੁਆ ਹੈ ਅੰਯਮ ਘੜੈਰ ਛੋਤਾ  
ਹੈ ਘੁਘ ਮਗਰ ਛੋਸਤ ਵਾਡੇਓ ਕਲਤੋ ਅੰਯਮ ਘੜੈਰ ਛੋਜਤਾ  
ਘੁਰੀ ਛਾਲਤ ਥੀ "ਵੋ ਵੋ ਆਓ ਸਾਧਵ ਵੋਛੀ ਹੈ ਕਾਛੀ ਸੀ

ਘੜੀਲ-ਛਾਂ ਵੋਛੀ ਹੈ ਕਾਛੀ ਯਾ ਨਾਮਥੀ ਕਲਵੋ ਹੈ ਘੜੀ  
ਘਲਤੀ ਛੁਛ ਹੈ ਉਸਕੀ ਤਮਾਮ ਉਅ ਓਸੀ ਕਾਮੋ ਮੈਂ ਗੁਜਰੀ ਹੈ  
ਘੈਰ ਕਲਵੋ ਕੋ ਸਮਝਾ ਘੁਆ ਕਰ ਘਤ ਦਿਆ ਗਯਾ ਘੁਸ ਕੋ ਲੇਕਰ  
ਵੋ ਰਵਾਨਾ ਛੁਓ, ਘਤ ਕਾ ਮਯਮੁਨ ਛੁਰਘ ਜੈਲ ਥਾ ,,

ਸ਼ੇਰ.

ਕਛਾਂ ਸੋ ਲਾਘੇਗਾ ਕਾਸਿਓ ਘਯਾਂ ਮੇਰੀ ਜਘਾਂ ਮੇਰੀ ॥

ਮਯ ਜਘ ਥਾਡੇ ਘੁਛ ਸੁਨ੍ਹੇ ਵੋ ਮੁਝਸੇ ਛਾਸਤਾਂ ਮੇਰੀ

ਘਾਰੀ-ਸਾਧਵ ਘੇਛ ਲਛ੍ਯ ਅਲਕਾਘ ਮੈਂ ਲਿਘਨਾ ਨਾ ਗਵਾਰ  
ਛੋਗਾ ਮਗਰ ਉਲਛ੍ਯ ਮੁਝਕੋ ਓਸ ਮਛ੍ਯ ਛੇ ਤਛ੍ਰੀਰ ਕਰਨੇ ਪਰ  
ਮਯਘੁਰ ਕਰਤੀ ਹੈ ਮੈਂ ਯਾਕਛ੍ਯ ਗੋ ਮੈਂ ਘੇਕ ਕੈਮ ਛੀਗਰ ਸੋ ਛੁੰ  
ਘਾਨੀ ਮੁਸਲਮਾਨਛੁੰ ਮਗਰ ਕਿਸੀ ਘੁਤ ਕਾ ਘੰਛ ਘਘਘਨਛੀ ਸੋ  
ਛੋ ਘੁਕਾ ਛੁੰ ਵੋਛੀ ਮਸਲ-

ਸ਼ੇਰ.

ਸਲਾਵਾ ਛੋਸ਼ ਤੋ ਮਰਨੇ ਲਗੇ ਛੁਸੀਨੋ ਪਰ ,,

ਛਮੇਂ ਤੋ ਮੋਤ ਛੀ ਆਓ ਸਘਾਘ ਛੇ ਘਲਵੇ ,,

ਓਸ ਕਮਘਘਤ ਉਲਛ੍ਯ ਪੇਂ ਕੁਛ ਮਯਛੁਘ ਵ ਮਿਲਵਤ ਕਾ  
ਘਘਾਲ ਨਛੀਂ ਰਹਤਾ ਛਾਘ ਮਗਰ ਮੈਂ ਤੁਮ ਕੋ ਘੁਤ ਯਾ ਕਥੋਂ ਕਰ

ਵਿਖੁੰ ਤੁਮ ਮੁਝ ਪਰ ਘੜੀ ਘੜੀ ਮਹੇਰਆਨਿਆਂ ਕਿਆ ਕਰਤੀ ਥੀ  
ਤੁਮਹਾਰਾ ਦਿਲ ਤੋ ਮਿਲੇ ਮੋਮ ਫੇ ਥਾ ਅਘ ਵੋ ਪਥਰ ਸੇ ਘਟਲ  
ਗਯਾ ਛੋਗਾ ਖੁਦਾ ਨਾ ਕਰ ਆਖਾ ਆਖਾ ਵਿਖੁੰ ਰਹਮ ਕਾ ਘੋਵਾਸਤ ਗਾਰ ਹੂੰ

ਤੁਮਹਾਰਾ ਘਟ ਨਸੀ ਅਵੀਲ

ਰਿਆਯ ਹੁਸੇਨ ਅਤ ਦੇਖਨੇ ਫੇ ਮਾਂਗਨੇ ਲਗੇ ਮਗਰ ਭਦਦੀ ਸੇ  
ਅਵੀਲ ਨੈ ਵਿਖਾਏ ਘੰਟੇ ਕਰਦਿਆ ਆਰ ਉਸਫੇ ਛਾਤ ਮੇਂ ਫੇਕਰ  
ਰਵਾਨਾ ਕੀਆ—

## ਅਛਾੜਮ ਆਖ.

ਆਂ ਲੀਡ ਮਕਨ ਫੇ ਹੈ ਫਰ ਪਰ ਲਗੀ ਫੁਧ,  
ਆਸੈ ਸਭੀਲ ਹੈ ਸਰੇ ਫਾਸਰ ਲਗੀ ਫੁਧ;

ਮੈ ਆਨਾ

ਉਸ ਵਸਤਕਾ ਮਛਮਾਨਲੀ ਕਾਘੀਲੇ ਦਿਓ ਆਸਮਾਨ ਪਰ ਥਰਾ  
ਘਾਓ ਫੁਧੈ ਕਲੀ ਕਲੀ ਨਹਨੀ ਨਹਨੀ ਘੁੰਦੇ ਲੀ ਪਠਨੇ ਲਗਤੀ  
ਹੂੰ ਮੈ ਆਨੇ ਮੈ ਫੁਧਮ ਹੈ ਕਿਸੀ ਆਫੇ ਨੋਸ਼ ਕੀ ਆਵਾਜ਼ ਹੈ—  
ਸੇਰ.

ਤੋਆ ਕਰ ਅਛਿਓ ਕੜੇਂ ਤੋਆ ਮੇਂ ਆਸੈ ਵਸਤ ਮੇਂ,  
ਘੇਛ ਅਛਾਰ ਆਓ ਫੁਧ ਆਰ ਘੇਛ ਥਰਾ ਘਾਓ ਫੁਧ,

ਨਾਜਰੀਨ ਜੋ ਫਰਜ਼ ਤੋ ਫਮਾਰਾ ਲੀ ਭੜਕੇਗਾ ਆਂਕੀ ਫਮਕਾ  
ਤੋ ਮਿਲਦਰ ਅਵੀਲ ਅਛਮਕੇ ਮਕਾਨ ਪਰ ਅਨਾਥਾ ਮਗਰ ਘਫਾਂ

के लुट् भी काभीने दीद होते है आज तो हम भी यंही  
के लुट्केका मशाहिदा करंगे वीज्ये काठ शराब का मतवा-  
ला अपनी धुनमें गजल उड़ा रहा है-

गजल.

करके हम मूरये छिपनास पिना सकी,  
या वही लुल लुल शेष की दुआ दे साकी,  
गर काँई ईल कर पीक शरीरतके पिनाइ,  
किरतो अशकमुअ सुली पे यडादे साकी,  
नाम जम जम तेरा में जाना हस्ती में रहै,  
देदे अक जम प्यासा की दुआ ले साकी,  
देया किस किस का तु मै किस का दिमायेगा जमल,  
सम के सम टरे तेरे यादने वाले साकी,  
काँई छाटी अहर में रट लगा रहा है-

गजल मोलिक.

कुजये मै धर का ला साकी आज तो बार के ल पिना साकी,  
हो जहा नसीबी काँ मैदे, मस्त अपना मुअे पना साकी,  
उट के पीने दे आज तुअका, जम मुह से त तु हटा साकी,  
तु पिनाये जे सुअका जम पेजम, हर्ज क्या है तेराबला साकी,  
अवे वो अक गोस आया है यह तो चौकडी ही सदन  
में दरफ्त के नीय ही छिटक गध-यसिये वहां यलै-

अक-मशाहरा डाने दो-शिइ-

दुसरा-येह वीज्ये:-

ਸ਼ੇਰ.

ਐ ਸੇਘੇ ਯੇ ਕਢੇਂ ਮੇਂ ਗੁਲ ਰੰਗ ਤੇ ਛਮਾਰਾ,  
ਐਸੇ ਤੇ ਅਸ ਲਗਾਏ ਸਰ ਪਰ ਉਤਾਰ ਪਾਂਝ,  
ਤੀਸਰਾ—ਘਿਲਕੁਲ ਦੁਰਸਤ ਮੇਰਾ ਘੀ ਸਾਦ ਹੈ:—

ਸ਼ੇਰ

ਕੁਝ ਸ਼ਾਨ ਮਗ਼ਰਿਬਤ ਸੇ ਨਹੀਂ ਦੁਰ ਅਛਿਦਾ ।  
ਏਘੇ ਗੁਨਾਹ ਘਾਵਹੁ ਕਸ਼ੋ ਤੇ ਸ਼ਰਾਬ ਮੇਂ ॥  
ਪਹੁਲਾ—ਛਾਂ—

ਸ਼ੇਰ

ਅਛਿਦ ਨੇ ਕਹੁ ਘੁਰੀ ਕਿ ਧੇਹੁ ਫੀਵਾਨੇ ਆਦਮੀਏਂ ।  
ਤੁਝੇਕੇ ਲਿਪਟ ਪਏਗੇ ਧੇਹੁ ਮਸਤਾਨੇ ਆਦਮੀ ਹੈ ॥  
ਬੈਥਾ—ਐਕ ਮੁਝੇ ਘੀ ਧਾਦ ਹੈ:—

ਸ਼ੇਰ

ਮੇਂ ਈਏ ਤੇ ਈਕਰਾਰ ਪੈ ਘੀ ਹੈ ਰਮਜ਼ਨ ਮੇਂ ।  
ਧੇਹੁ ਕਰ੍ਹ ਅਦਾ ਹੋ ਤੇ ਘਡਾ ਕਰ੍ਹ ਅਦਾ ਹੋ ॥  
ਦੁਸਰਾ—ਅਜਕ ਅਦਲਾ—

ਸ਼ੇਰ

ਸਲਲ ਕਰਕੇ ਅਲਿਧੇ ਜਰਾ ਸੇਘ ਸਾਫ਼ਘ ।  
ਧੇਹੁ ਮੇਂ ਘਾਨਾ ਹੈ ਤਿਘਲ ਕਾਘਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ॥  
ਤੀਸਰਾ—ਵਾਹਵਾਹ ਤਿਘਲਾ ਕਾਘਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਮੁਨਿਧੇ

ਸ਼ੇਰ

ਮੁਹਤਸਿਘ ਪਥਰਹੈ ਦਿਲ ਤੇਰਾ ਤੇਰੇ ਕਿਸੀ ਕਾਮਠਾ ।  
ਡਾਲਦੇ ਈਸੇਕਾ ਕਿਸੀ ਮੈ ਆਨੇ ਕੀ ਫੀਵਾਰ ਮੇਂ ॥  
ਐਥਾ—ਫਾਗ—

ਸ਼ੇਰ

ਦੁਖ ਘਲ ਭਰ ਮੇਰੇ ਸਾਕੀ ਕੀ ਸਭਾਵਤ ਯਹਿਦ ।  
ਐਕ ਸਾਗਿਰ ਫਾਥ ਮਾਗੇ ਤੋ ਸਭ ਦੇਤੇ ਹੈਂ ॥  
ਅਯ ਧਿਰ ਦੁਖਿਏ ਫਾਥ ਹਜ਼ਰਤ ਸਾਕੀ ਸੇ ਅਡਰਫੇਏ  
ਸ਼ੇਰ

ਮੇਂ ਯੁਨ੍ਹ ਘਰ ਪਿਲਾਫੇ ਕਥਾ ਹੁਸ ਰਹਾ ਹੈ ਸਾਕੀ ,  
ਘਰ ਘਰ ਕੇ ਪੀਤੇ ਆਧਿਰ ਪੈਮਾਨਾ ਆਦਮੀ ਹੈ ,,  
ਅਮਾਹ ਆਥਿਏ ਆਪਣੀ ਕੀ ਫੇਰਥੀ ਯੇਹ ਫੁਲਰੇ ਕਾਨ ਸਾਹਯ  
ਹੈਂ ਆਫੇ ਦੁਖਲਿਆ ਯੁਘ ਯੇਹ ਤੋ ਮੁਨ੍ਹੀ ਗੋਰਯ ਰਾਮ ਸਾਹਯ  
ਕੇ ਸਾਹਯਯਾਏ ਹੈਂ—ਅਫ਼ਸੋਸ ਕਥਾ ਗੋਰਯ ਰਾਮ ਸਾਹਯ ਯੁਂ ਸ਼ਰਾਯ  
ਮੇਂ ਘਰਯਾਫ ਹੋਨੇ ਕਾ ਕਮਾਥਿ ਕਰਕੇ ਰਘਯਏ ਹੈਂ ਯੇਹ ਵਹੀਂ ਮਸਲ  
ਫੈਕਿ ਆਪ ਕਮਾਏ ਯੈਟਾ ਉਡਾਏ, ਆਰ ਯੇਹ ਟੀਸਰੇ ਕਾਨ ਲਕਾਏ  
ਸ਼ਰੀਫ ਹੈ—

ਅਯਯ ਯੁਘ ਪਫੇਯਾਨਾ ਪੰਡਿਤ ਕਸ਼ਨ ਸਾਹਯ ਕੇ ਯਿਯਿਰਾਗ  
ਹੈਂ ਯੇਹ ਯਹਾਂ ਕਠਾਂ ਉਸ ਰੋਜ਼ ਤੋ ਉਸ ਯੇਯਾਰੇ ਮੁਸਲਮਾਨ ਸੇ  
ਰੇਲਵੇ ਮੁਸਾਫਿਰ ਆਨੇ ਮੇਂ ਲਡ ਪਏਏ ਖੰਟਾਂ ਸਲਵਾਤੇਂ ਸੁਨਾਥ

नहीं- कुछ प्यात भी नहीं न आलुम चूट या सत्र कर  
हात से हनुवर के उपर पानी डी छींट न पड़ी थी अथ इनसे  
कोई पुछे येह शराब ने आप पीने को मुसलैद हैं कैसी हैं  
जेकि नापाक होने के अलावा गलीज भी है इसको पीते  
वक्त अक्सर लोग देखते हैं कि इस में सैकड़ों मच्छड और  
बकभियां और कीड़े मकोड़े सड जते हैं जिससे कि फिर  
शराब भीची जाती हैं अइसोस सद अइसोस वहां जन्म  
पत्तरा बनाये और वहां पर इस कम्पत्त को मुंह लगा  
कर मजे उठाये-- आज कसई पुल गध आंथ से देखलिया  
अथ क्या मुकेशिंगे-मगर और हम किसीसे न कहेंगे वरना  
तुम्हारे पंडासियों के नुकसान होगा मगर शर्त येह है कि  
अथ यहां न देखे-और अथ हम किस किस का नाम लें  
यहां कैई उजले पोश में नौश पुद इराभोश भौनुद  
हैं वो देखिये कुरसियों पर उट गये

और हो जर्ज मगर जर्ज न में जाने से ॥

अहद शीशे में तो पैमां है पैमाने से ॥

ला बाई ला क्या दर हय शीशे युन दिये गये काय न  
रथ दिये गये यहां क्या थान्दौर शिइ-जम पर जम मढ़ाये  
गये फिरली और ला और ला और ला की सदा काधम  
अथ क्या था नशा ही आनद शिइ हुई कोई कुरसी से

ਨੀਥੇ ਗੀਰਾ ਕਿਸੀਂ ਕਾ ਸਰ ਨੀਥੇ ਪੈਰ ਕੁਰਸੀ ਪਰ ਕੇ ਮੁਢ ਸੇ ਥੀਸ਼ਾ  
 ਲਗਾ ਹੈ ਐਰ ਗਾਨਾ ਛੋ ਰਹੇਹੈਂ ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਅਸਕਾ ਅਥੀ  
 ਅਥੀ ਤਰਹੁ ਨਸ਼ਾ ਤ ਘਟਾ ਥਾ ਕਥਾਯ ਕੀ ਰਕਾਥੀ ਉਠਾ ਕਰ  
 ਧੜੇ ਮਗਰ ਨਸ਼ੇ ਕੀ ਯਾਦਗੀ ਨੇ ਜਮੀਨ ਪਰ ਘਿਠਾ ਦਿਯਾ ਘਸ  
 ਜਮੀਨ ਪਰ ਫਰਾਜ ਹੋ ਗਏ ਧਸ ਕਾ ਮਯ ਕਾਘਿਲ ਦੀਦ ਹੈ ਕ੍ਯੋਂ  
 ਕਰ ਤਹਰੀਰ ਕੜੇਂ ਹੁਸੀ ਕਲਮ ਧਲਾਨੇਸੇ ਮਾਨਾਹੈ—ਕਛ ਕਛ ਕਛ  
 ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ.....ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ ਕਛ—ਪੰਡਿਤ ਸਾਹਯ ਭੀ  
 ਕਥਾਯ ਕੇ ਲੁਕਮੇ ਲੇ ਰਹੇ ਹੈਂ ਐਰ ਉਨਕੇ ਮੁਵਨਨਸ ਕੁੱਤੇ ਸਾਹਯ  
 ਥੀ ਸਾਥ ਹੀ ਕਥਾਯ ਧਯ ਰਹੇ ਹੈਂ—

ਸਮੁੱਤ ਅਕਸੋਸ ਹੈ ਧੰਸ ਕੀ ਛਾਵਤ ਐਰ ਆਵਤ ਪਰ ਨੇ  
 ਯ ਧਰਮ ਖੁਦ ਧੰਸ ਛਾਵਤ ਕੋ ਦੇਖ ਕਰ ਥੀ ਧੰਸ ਕਮਘਮੁਤ  
 ਕੋ ਨ ਓਡੇ ਖੁਦਾਵਨਦ ਕਰੀਮ ਹੁਰ ਐਕ ਅਹੁਲੇਓਮਾਨ ਕੋ ਧੰਸ  
 ਸ਼ਰਾਯ ਖਾਨੇ ਘਰਾਯ ਸੇ ਮਹਕੁਜ ਰਥੇ ॥

## ਪਾਂਚਵਾ ਯਾਯ

ਮੁੜ ਧਲਾ ਥਾ ਕੁਰਕਤ ਮੇਂ ਬਿਰਾਗ ਪਸਤੀ ।

ਕਾਮਘਾਯਾ ਤੇਰੀ ਤਸਵੀਰ ਕਾ ਰੋਗਨ ਕੈਸਾ ॥

ਅਤੋ ਕਿਤਾਯਤ.

ਅਖੀਲ—ਦੇਖਿਯੇ ਕਲਤੋ ਜਥਾਯ ਲੋਕਰ ਧੋਹ ਨ ਫਿਰੀ ਸਾਥਦ  
 ਛੋਕੋ ਅਥੀ ਨ ਮਿਲਾ



રિયાજ—દેખિયે વહ સામને લપકતી ઝપકતી ચલી આ રહી  
હય;; ખલીલને ખત લેકર ચાકકિયા ઓર પઢને લગા,

જનાખ મન

અફસોસ હૈ મુઝકો આપકી તહરીર પ્યારીકા લક્ષ્જ કિસી  
અજનબી ઓર ગૈર લડકીકે વાસ્તે ઇસ્તેમાલ કરના ક્યા  
દુરસ્ત હય ક્યા તુમ મુઝકો ખૈખખર કિયા કરતે હો ક્યા  
મુઝકો ઇતની ભી ખખર નહીં કિ કિસી ગૈર શખ્સ સે  
રખખત પૈદા કરકે બદનામહુ મેં સચ કહતી હુ મુઝકો જરા  
તુમસે ઉલ્લટ નહીં હૈ તુમકો મુઝસે હરગીજ ઐસી ઉમ્મેદ  
ન રખની ચાહિયે કિમેં આયન્દા તુમહારે ખત કા જવાબ  
લિખું સિર્ફ તુમકો આયન્દે કે વાસ્તે હિદાયત કરદી ઐસી  
તહરીર મુઝકો ખહોત રંગ પહોચાતી હય તુમકો ઐસી  
તહરીર હરગીજ ન બેજની ચાહિયે જિસમે મેરી ઓર  
તુમહારી દોનોં કી બદનામી હો બલ્કિ તદખીર ઐસી કરની  
ચાહિયે કિ જિસસ આસાનીસે તુમહારે દિલસે મેરી ઉલ્લટ  
કતઈય નીકલ જાય ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે ચેહ ખાર  
નિકલ જાય યાની મુઝકો કોઈ અગુસ્ત તુમા ન કરે ઓર  
તુમહારે ખયાલાત ભી ચકબ રહે ઈસ ખત કા જવાબ દેખને  
કી મુઝકો હરગીજ જરૂરત નહી તુમ જરૂર ઈસ ખત સે સબક

લેકર ખયાલ બદ છોડદાગે કવી ઉશ્મેદ હૈ અતેર સ્યાહ ધખ્ખે  
કા ખત દિલ સે નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા

રકીમા પ્યારી

ખલીલ—અફસોસ હાય લીજીયે કયા ઉશ્મેદ કી જાયે હમતો  
વહલી નસહ ચેહ ખત કયા હૈ એક નસીહત નામા સચ હૈ  
તદખીર કિસ્મત કી ખુરાઈ નહીં જતી

રિયાજ—(દેખો ચેહ કહકર શુરૂ સે આખિરતક પઢગયે)  
વાકઈ અગર ઇન્સાફ સે દેખા જાય તો બિલકુલ સચ અબ  
ક્યા કિયા જાય (ફિર ગૌર સે ખત દેખકર ચોર પઢકર એકાએક  
ઉઠવકર) ખુબ હોસ્ત અબ શિરની ખિલા ઓ અબ તુમહારી  
મુરાદ પુરી હોગઈ

ખલીલ—વાહવા આપ મુઝકો ક્યાં ખનાતે હંચ સાફ જવાબ  
તો લિખદિયા ખલિક આયન્દા ખત કે જખાબ કા ભી ઈન્કાર હૈ

રિયાજ—લુત્ફ તો ચેહી હૈ કિ ઈસપર ભી તુમ કામ ચાખ  
હો જખાગે અખતો તુમ હોશતોં કી અચ્ચારી કે કાખિલ હોગે

ખલીલ—ક્યા અબલીકોઈ તદખીર જહનમેં આઈહૈ

રિયાજ—તદખીર ક્યા તુમકો હસને હીં કામ ચાખી કી ઉમતેદ  
દિલાદી તુમને ઈસ ખતકો ચોર સે નહી પઢા દેખો આખિર સતર  
કા આખીરી જુમલા ફિરસે પઢોઃ; સ્યાહ ધખ્ખેકો ખતેદિલ સે  
નિકાલ કર પઢોગે તો મુફીદ સાબિત હોગા ચેહ ઈશારા હય

ગોયા ઈસ ખતમેં સ્થાહ ધખમેહું ઉન સતરેં કે નિકાલ  
કર પડો

ખલીલ-દેખું આહ હાહાહાહા વાહ

ઉસી ખતકા અરલી મજસૂન

જનાખ મન

અફસોસ હું મુઝકો આપકી તહરીર ખ્યારે ક્યા તુમ મુજકો  
ખિલકુલ બે ખબર ખયાલ કરતે હો ક્યા મુઝકો ઇનીલી ઉલ્કત  
નહી હય તુમકો મુઝસે હરગિજ આમીં ઉમમેદ ન રખની  
આહિયે કિ ઐસી તહરીર મુઝકો રંજ પહોચાતી હય તુમકો  
કોઈ ઐસી તદખીર કરની આહિયે કિ જસહે આસાની સે  
તુમહારે ઓર હમારે દોનોં કે દિલસે થેહ ખાર નિકલજાવે  
યાની એકજરમેં ખાસ ખત કા જવાબ દેખનેકી મુઝે કવી  
ઉમમેદ હું

રકીમા ખ્યારી

રિયાજ—તો ઓર ક્યા લોગે ક્યા ખતકે જમાખ મેં વોહ  
ખુદહી ચલી આઐ મગર દેખો દોસન ક્યા અકલ મંદ  
લડકી હૈ મજમૂન દેખો કિતના ઉમ્દા ઓર જુ માની હૈ કિ  
જસને ખિલકુલ ના ઉમમેદ કરેકે ઉમમેદ દિલાદી ગજબકી  
આકિલ હય દેખિએ અગર કોઈ દુસરા ઈસ ખતકો સરાસરી  
તૌર પર દેખે તો હરગીજ થેહ મતલખ નહીં નિકાલ સક્ત

ખલીલ—હાય ક્યા પ્યારી હય તહરીર ખસ હાયે  
ચુમતે દુસરા ક્યા મુઝહી કા ઘોક મેં ડાલ દિયા (ખત કા  
ખોસા લેકર) હાય નામ લી ક્યા પ્યારા હૈ “પ્યારી” સય  
હય હોલી તો તૂ પ્યારીહી ।

રિયાજ—દોસ્ત ઉસને ઈસમેં તુમહારી અવજ કી લી અંચકી  
હય ઇતકાક હી સે ઇસ વક્ત મતલબ નિકલ આયા વરના  
ખડે અહમક ખતલે ॥

ખલીલ—અમ ક્યા જનાખૌ લિખના ચાહિયે મજમુન નિગારી  
તો મુઝે ઈસ વક્ત સૂઝતી નહીં દો હરફ મેં જવખ  
લિખે દેતા હું ।

કાગજ કલમ ઉઠા કર થોં લિખદિયા

અન ખલીલ

તુમહારે ખતને મસીહ ઈ કરકે મુઝ કરીમુઝ મગર  
અન ખખ્શી આગર તુમ કર સકતી હો તો સમ કુછ હો  
સક્તાહૈ મેં હર તરફ રખાંદ હું મેંતો અપને કા તુમહારે  
નજર કર ચુકા હું

સેર—તરકીમ ખમ હય જો મિજાજ યાર મેં અઝે  
દેખીયે પરદા હિજર દરમિયાં સે કમ ઉઠે

ખલીલ

રિયાજ હુસેન કા ખત સુનાકર કલ્લો ક નજર કિયા ઝોર  
હો રૂપે ઈનામ દેકર રવાના કિયા રૂખસત રૂખસત ॥

## છટા બાળ

દોનોં આલમ કી મુયસ્સર મુજે દૈલત હોગઈ  
 નમવર પહેલુ મેં બે વોહ ચાંદસી સૂરત હોગઈ  
 પયામે ચાર

નાજરીન—આજ કરીબ એક માહ કે બાદ હમ આપસે  
 મિત્રે હૈં કયોં કિ ઈસ અધ્યામ મેં કોઈ ખાસ ખાત કાખિલ  
 નોટ કરનેકે નહીં હુઈ સિવાય ખતૂતકી આમદ રૂપત ઈજહાર  
 આરબુકે ઈસ વક્ત સૂરજ ગુરૂબ હુએ કરીબ ૧૥ ઘંટા  
 હો ગયા હૈ મિસ્ટર ખત્રીત અકમદ સાહબ કહીં બને  
 કે તય્યારિયાં કર રહે હંચ યાની સિફ અચકન વગૈરહ  
 પહેન રહે હૈં કયોંકિ ઈનકા કોઈ ખાસ પહેન ને કી જરૂરત  
 નહીં હુઈ હર વક્ત ઈનકા લિખાસ જરા વજ અદાર રહેતા  
 હય ઈનકા કોઈ ખાસ રાસ્તા હોને કી જરૂરત નહીં મગર  
 અબી યેહ નહીં ખુશ કે યેહ તૈય્યારિયાં કહાંકકી હો રહી  
 હૈં અઅજ રિયાજ સાહબ આગે સખ કુછ માલુમ હોગા

ખત્રીત—દેખો વોહ ખત મેજ પર મડા હય !

રિયાજ—ખત ઉઠાકર પઢને લગતા હય ॥

ખત

જનાબ મન

ધસી વક્ત તુમ જરા સિફ ૧૦ મિનટ કે વાસ્તે હો બઓ

મેં ખાગીએ મેં મિલુંગી મુઝેકા તુમ સે કુછ કહેના હમ  
આજ લાલા યહાં નહીં હય ખહોત જદદ આએ શરાફી  
દરવાજે સે આના ॥

પ્યારી

રિયાજ—અચ્છા યોં કહિયે આજ શય અન્વલ હૈ વાહ દોસ્ત  
ખલીલ—યાર હમસે તો ખાત લી કરની નહીં આતી ઓર  
ખાસકર ઉસકે સામને ક્યોં કર જખાન ખુલૈગી ॥

ખલીલ—અહમદ સાહબ ખનટન કર રિયાજ હુસેન સે  
ફખસત હુએ

નાજરીન—ખલીલ અહમદલી કુછ હુસેનોં સુરત મેં કમ ન  
થા ઉસને લી વોહ શકલ પાર્ઠ હય જીસ પર તમ રફલકી  
હમેશા નજર રહી હય ઓર સૈકડોં આપસ મેં રકાબત  
કરકે લડ મરે હય ફિર ઉસપર જરાની ઈસ વક્ત ઈસકી  
ખુશીકા અંદાજ હમારે ખયાલ સે બાહર હય કદવો આગે  
ઈતલા ફેને કો બ ચુકી હય ઈસ હસીન ચૌહક સાલ માહકે  
બેખન કો ન પુછિયે ગોયા એક હુસન કી દેવી ઉમકા સહી  
ફાદ ખીંચના તો મેરે ઈમકાન સે બાહર હૈ મગર સિફ  
ઈતના લિખ દેતા હું કિ નાજરીન મેં સે કોઈ કૈસાહી અહિદ  
ઓર પારસા ક્યોં નહો દેખકર બે તાબના બે ખુદ હોકર દિલ  
મેસોસ કર રહે બય ઈસ મેં જરા લી મુખાલિગા નહીં કિ

जोया जागीयोमें डाह काइ से कोरि परी उतर आध है कि  
 ने किसीके धन्तिजर में रोशपर टहल रही है ज्वीन  
 अइमद को आते हुये देखकर दूरन परामदे से होती हुई  
 कमरे में ओक कुर्सी पर आ बैठी ज्वीन अइमद का कमरे  
 में दृष्टि होना था कि जरा शरमाई आव न मे येह  
 सेर अदा किया ॥

वोह घर में आये हमारे पुछा की कुदरत से ।

कली हम उनको कली अपने धरेको देखते हैं ॥

प्यारी— साहेब हम ऐसी हालत में आपकी क्या  
 तवज्जे कर सकते हैं योरी योरी मिलना इसमें तवज्जे की  
 कौनसी सूरत है ॥

ज्वीन—( ओक जड़ी हिम्मत करके कांपती हुई आवाज में )  
 साहब आप धितने क्षमिने पर बैठी हैं ( हाथ पकड़ कर )  
 जरा धसतराई को कुर्सी पीछे कर आगध येह तवज्जे  
 क्या आपकी थोड़ीहै कि इस नायीज को आपने याद किया  
 प्यारी—हाथ छुड़ाकर ) अली आप मुझे हाथ लगाने का  
 हक नहीं रखते येह मे हयाध बी धिस्तेमाल नकीज्ये  
 हाथ लगाना आसान काम नहीं जपतक आपमेरी सन्द  
 बातोंका जवाब नदे और डाल नकरें वोह पड़ोत मुशकिल  
 सवाल हैं ॥

ખલીલ—મેરી જાન ક્યા વોહ સવ લા ઐસે મુશકિલ  
હૈં જાન્કા મેં હસન કરસકું ખુદા ન કરે યેહ નામુમકિન  
હય ઈસસે જાયાદા ઓર કાઈ સવાલ ન હોગા કિ આપ  
જાન તલબકરેં બ ખુદા વોહ બી દેને કા મુસ્લઈદ હૂં ॥

ખારી—ખેર રહને હીજાયે ઐસે તો હમને અક્સર લોગોં  
કા કહેતે સુના હય ક્યોંકિ ફિકરા જખાનસે નિકાલના તો  
આસાનહય ઓર પરમેશ્વર ન કરે મેં જાન ક્યોં તલબ  
કરને લગી જખ વોહ જાન ન હોગી તૌ યેહ જાન કબ  
હોગી મગર સિર્ફ મુઝકા યેહ કહેના હય કિ ઈસ ખાતસે  
તુમ બખૂબી આગાહ હો કિ મેરી કૌમ ક્યા હયે ઓર દુસરે  
યહાં પર ઈસ તરહ મિલને સે અગર આજ ન ખુલી તૌ  
કલ જરૂર ખુલૈગી ઈસ વાસ્તે અગર મુનાસીબ સમઝૌ તૌ  
યહાં સે કિસી દુસરી જગહ ચલો જહાં હમ ઓર તુમ બે  
ખટકે ઐશ સે ખસર કરેં ॥

ખલીલ—ખસ યેહ સવાલ થા યેહતો ખેરે હસખ મુરાદ હય  
મેં તૌ તુમહારી રાયકા મુન્તિજરથા મેં હર વક્ત તૈયાર હૂં ॥

ખારી—ખસ તો નહીં એક મોકા આને વાલા હૈં ય ની  
આજ સે ચોથે રોજ મેં રોજ ઘાટ ગંગા સ્નાન કા જાંગી  
તુમબી મેલા દખ્ખનેકા તૈયાર હોકર આના વહીં સે શખ કી  
ગાડીસે હહેલીકી જાનિબ ફૂંચ મગર યેહ હાલ કિસા પર ન



भुत्ते देणो कंयप्पत विद्धन वालदेन को छुडाने पर मज्झूर  
कर नही है ये मोहप्पत येह करशमे ।

पलील—पडेतरहय अण रात न्यादा गछ आओ आर  
म करे ॥

नाजरीन—अण आगे विपना तहज्जसे पाहर प्याल किया  
जता है एसि वास्ते इप्पसत होते हैं हां येह जइर हय के  
अन्दर से कुछतो आवाज पातो की आती ओर वोह पाते  
सी होगछ पटिक सिई यूडियो ओर पाण्य की जनकार  
सुनाई देती रही मगर अण वोह सी माळूम नही होती  
है के पलील आमद मुकाबिल पर गालिय आ गये ॥

अण आगे विपू मे सरोदस्त  
होता हय इवात मे कलम भस्त

### सातवां पाण.

कअप्पा ओर पुतप्पानेका जनना पिगडना देप्पा  
पाने परप्पादी किसी की हो किसी का घर जने  
मेला से डिक्कर का मज्झून

सुणह नमूदार हो यली है आर पण की पाडी छुटने  
मे सिई १० मिनट पाडी रहगये मुसाफिर अपना अपना  
पेरिया पंधना सप्पावे हुये गाडी मे सवार होते होते हैं

આજ અઝઘહમ મઝમૂલ સે જીયાદા હૈ ઓહો આજ રાજ  
 ઘાટ કા મેલા હય હમારે હીરો મિસ્ટર ખલીલ અહમદ સાહબ  
 બી એક તરફ ઠા ખડે હુએ મશોશ નિગાહ સે ઈધર ઉધર  
 દેખ રહે હંય લો અબ ઉનકી મશૂક નિગાહ એક અજબ  
 નિગાહ સે બદલગઈ યાની સામને જહાં પર એક લડકા  
 જસકા સન કરીય ૧૫ સાલ ઠે હોગા ઓર એક અધેડ  
 ઉમર કી ઓરત જસકા શબાબ કા જમ ના ખતમ હુએ  
 અસા હોગયા હય ઓર એક લડકી ગાડીમેં સવાર હોને ઠા  
 બ રહી હય દેખ રહે હૈ ॥

નાજરીન યકીન હય કે આપ પહેયાન ગયે હો કે એહ  
 કૌન લોગ હૈ લડકી કૌ તો જરૂર હીં પહેયાના લિયા હોગા  
 વોહી હમારે ખલીલ અહમદ કી દિલદારહ પ્યારી હય સિફ  
 એહ દોનોં જૈની હૈ જનમેં સે એક પ્યારી કી  
 મોંસી (ખાલ) હય ઓર એક ઉસકા ખાલા બદ ભાઈ હૈ  
 પ્યારી એક અજબ અંદાજ સે સબકી નિગાહ ખચાકર પીછે  
 ફિર ફિર કર દેખતી જતી હય યાની

ઉનકી તરફ નિપાહ ઠહરતી નહીં મેરી ।

દિલ મેં હય એહ ખયાલ કોઈ દેખતા નહો ॥

ધન્દી હોગઈ-મુસાફિરોં કા ગાડી મેં બેઠના અબ ખતમ  
 હોગયા લીજીએ અબ વોહ સિંગલ લી ડાબીન હોગયા ગડી લી

रवाना होगध और इट्टी बरती हुई धर्मियानी स्टेशनों का छोड़ती हुई राज घाट नरदहर स्टेशन पर पहुँच्यगर्ग गो मेला अथवा साक्ष्यअच्छीतरह नहीं हय मगर बीड बी कमनही अश्नान शिड़ होगया जनाना घाट पर याशं सरे पुलपर भडे धूर रहेहैं हर एक निगाह जनपर येबाक हय किसी के अगुर नुमा पिस्तां पर ताक हय ।

एक दूसरे का मुष्पातिण कर के आवाज से कस रहे हैं जनारसी साडियां भी अच्छी होती हैं काँध इरमा रहेहैं नकरा इसरना देपिये काँध ये तमांशा बिस्ला डो

अरे यार उधर देपो अथ क्यारहोगया नेकुछ रहेभी गया था वोह सादी के बीग जाने से पोशी दा न रहा मैदान बिलकुल साक्ष है गरजे के आनंद और तैं पसन्द तभी अत वालोंके नेकुछ दिलमे आता है कहते हैं हमारे हीरो धन भी मान्हुँ नडा धोकर इरिग होगध और अथ क्यामपर आकर नया जेडा तपुदीलि करलीयाहैं नाजरिन-अथ मेलेडी सैर करते करते शाम होगध आइताण दीमेलेडी-सिपर और भस्तुरात की धूराध रीसे इरागत पाकर मगरिअकी तर्ह रवाना होगया और मडा ताण अपने कमसिन शौक के साथ सितारों के इस्तयाक तद्रीह में पिरामा पिरामा आरहहैं अथ तकरीबन शब्द १२ पजे होंगे पाजरमे बिलकुल सन्नाटा छाया हुवा हय आमाद रक्त पंद है

हैं येद फात है जे अघेरेमें नतडा प्यारी हय अयछा  
 औरसे देभनेसे पड़यानलिया हमरी हरो यन प्यारी हय  
 अदीन अहमद का छतिअर है अदीन भी आगये और  
 बीछये छिस्टेशन परहदुअगये देहदीका टिकट सैकिन्ड क्लास  
 का ले लिया गयाहै थर्ड क्लासके वरैखी और मुरादा पाछे  
 जानेवाले मुसाफिर अयछा छगतरा में हैं कि कहीं हमरह  
 न जाय क्योंकि अजयाम जिस तरह है बीछये गाड़ी आन  
 पड़ुयी सवार होलये गाड़ी छुटगई मुसाफिर बहुत रहगये  
 हैं छिस्की आवाज व रइतार में तदवीकी डेरी हो गई  
 अट अट अट अट अयछा रेलवे पुन डो अपूर कर रहे  
 हैं हिन्दुलोग जकारो के नारे जुलद कररहैं हैं वोत्र श्री  
 गंगाजी की नै पैसा पैसा पर कैकरहैं पुन अत्म हुआ गाड़ी  
 सपाट बरनेलगी लक लक प्यारी और अदीन अहमद बैठे  
 हुअेह बिबासप्यारी ने दुसरा तबदील कर लिया हय कि  
 काई पड़यान नवे अइसोस हाय गजब गजब अे उइत  
 अे कमअभत तुअंका ओलाहो वासदेन से छुडाने में बरा  
 अयाल नहीं होता बरा पशोपेश नहीं करने देती जेदिल  
 में आताहय कर गुजरनेदेती हय तेरे हाथों अैसे भजपूर  
 हो जते हैं कि वासदेन की बरसो छिउलअत व मैहअभत  
 और मेहनत की बरा परवाह नहीं करती तेरा अर्ताव और

અસર બુદે ઓર જવાન ઓર બચ્ચોં પર ચકસાં હોતા હમ  
ખલીલ અહમદ કો ૧૬ સાલતક પરવરખ કરને વાલે વાલદેત  
કલકો ન પાકર અપના કયા હાલ કરેગે ગો વોહ બહુત ખુશદે  
મગર હિન્કો ક્યા ક્યા ખ્યાલ ખદ ન ગુજરેગે

બાપુ લક્ષ્મી નારાયનકો જખ ૧૫ સાલ: લડકી પ્યારી કે  
મુમહો બનેકી ખખર હોગઈ તો વોહ અપની આખર પર  
ક્યા ક્યા આસૂ ખહાયેગે ચેહ હાલ દુસરોં પર બહિર કરને  
હુએ કેસે કેસે ન શરમાયેગે ॥

બદિક અપની ઈજજતો આખર કા ખ્યાલ કરકે દુસરોં પર  
શાયદ બહિરલી ન કરેં ઓર દિલહી દિલમેં શક્કત પિઠરી  
સે અપને જીગર ગોશ: કા ખ્યાલ કરકે બુદાઝ કે ગમકે હાયોં  
હલાક હો બાયેગે નાજરીન હમ દેહલી કે ઇસ્ટેશન પર અ ન  
કે પોંચાકર રખસત હોતે ઈશા અદલાહ કલ મુત્ર કાત હોગી

## બાબ આંઠવાં

અખતો આરામસે ગુજરતી હૈ

આકખત કી ખખર ખુદા બને

કયામે મજલિસ તરખ

દેહલી મેં ક્વારાસે રામા ઠેઠરી કલ કમ્પની કી તર્ફ સે  
બને વાંલી સડક કે મુતસિલ એક કૂચેમેં એકમકાન

मिथुन मामूली हयसियतका है उसमें अलीन अहमद और  
प्यारी बैठे बैठे बातें कर रहे हैं ॥

अलीन—यही मकान तो अच्छा मिल गया किसी किरमंदी  
तकलीफ़ न उठानी पड़ेगी गुप्त पाना बपरमी पान सण  
मौजुद हैं

प्यारी—हां मकान मिल गया अगर आपने किसी आदमी  
की तजवीज़ की ज़रूर आदमी के किस तरह काम चल उठा है .

अलीन—अच्छा तो अबमें गया किस वास्तेया सणका  
बन्दो बस्त कर आया हूँ यहाँ पर मेरे पड़े दोस्त हय  
कि किसी किस्म की तकलीफ़ न होगी क्योंकि वोह मेरे क्लास  
फ़ेलो ( हममकतव ) ( सड़ पाठी ) हैं अली गडमें पांयपरस  
तक मेरे साथ तादीम पाई है और हाईस्कूल में वोह और  
में पढते रहे हैं अलिक वोह मेरे ही मकान पर थे अब  
यहां पर उन्का मकान है और एक माकुल मशार्फ़ रेपर किसी  
कम्पनी या कारख़ाने में जुला लूमहूँ यैतौ मेरे एक  
अच्छाभी मौजुद है अगर उनसे रिस वस्त मिलना मिलाई  
मसलहत है में हर बातका बंदोबस्त कर आया हूँ सामान  
ज़रूरी करनीयर वगैरह अब आता होगा एक औरत और  
एक लडका भी आता होगा हमें कुछ फ़िकर न करनी होगी  
अब अप छत्मीनान रणिये अगर हां येह तो करमाधये तुम्हारे  
आने वगैरे का क्या होगा

प्यारी—आपसे प्यारे तुममुझसे आप इसभुआभिबे में कुछ न कडा अव्वल तो में कुछ छुत जातडा कुछ समझती नहीं और मेरे अडीदे की हावत तुमपर रोशन हो जायगी और दूसरे अमक्या में तुमसे जुदाहो सवती हूं और अगर जुदा पवस्ता जुदाभी कुछ तो वोहक्या अपने साथ मुझको निवासको हें हरगिज नहीं में उनके नजदीक किसीकाम की नहीं

अधील—प्यारी आप कैसी जाते करती हें जुदा नकरें जुदाई का मनहूस दिन दिखाना नसीज हो अगर जुदाओ मंजुर हैतो महारी तुम्हारी जन्मणी यकज कटणी और हमारा मजहज अगर तुमको इस मजहज के उम्रल लबे मावूम होतो इसीकी पैरवी करो वरना तुमको छपतयार है

प्यारी—अस इसप्यारे में तुमझारे कहेनेकी जरूरत नहीं है मैने जेहात कितायें देभीहैं शायद तुमको अपने मजहज में छतनी वाकियत न होगी छतनी किमें वाकिश हूं वो वोह कुर्सियां जगैरा आगई करीने से लगवाद्य सामान सज करीने से लगगया ॥

प्यारी—जहेतर हुवाकी तुम्हारी मुलाकात निकली

अधील—मुलाकात क्या बाईसे ज्यादा हय ( दरवाजे पर आवाज हंसकर ) वो वोह गिरजभा में दोस्त आगये बुलाये लेता हूं

મિરજાખાં—મકાન ઠીક છે અગર નહોતો દુસરા મૈજુદ છે ॥

ખડીત—મકાન બકોતડીકે છે સખ તરફ આરામ હય સામા-  
નથી સખ આગયા આદમી ઠાન સાલાયે

મિરજાખાં—યેહ આદમી મૈજુદ હય ઓરત શામ છે  
આખાયગી

ખડીત—યેહ અચ્છા યેહ શખખ ખનાપકા સક્તા છે

મિરજાખાં—( મુઝાજીમસે ) ક્યાંમે શૈરાતી

શૈરાતી—ખૂ ખૂ ખૂ ખૂ જનનાહું ઉસદિનખાયુ જીને દો  
દાવત મેં દોફને કિસકે હાયકે ખયે થે આલીતે ભુ ભુ ભુ  
જૂઝ ગયે ચૈયાહી તો દિન છે

ખડીત—અચ્છા આપ હકલે લી છે

મિરજાખાં—અજી હજરત આપકે તખી અન અતકે મુવા-  
ફિક હય ઇસકા ગાના સુનિયે જમ હકલી જવાન સે ( અસીયા  
બાગી સુન્દરખન જરગયૈ! )

ખડીત—હાં ખુબ યાદ આયા બાજ શખકા લેને અના ઓર  
આપ કહી આઝે મગર હરામીનિયમ જલ્દ કિસી કે હાય ભેજ  
દેના ક્યોકિશાયદ આપને દફતર સે નૈ. હય ખજરતકા અતેદાગે

મિરજાખાં—બાજ મેં અલી ભેજતા હું

( યેહ કહકર ખડે હોગયે ઓર કહા ) લો આમ દફતર કો દેર  
ઠેલી છે બેકાંમકો ધરપર બકર. પૂરા કરના સત્તામ અલૈકમ



ખલીલ—ફિર કબતક આધયેગા

મિરજખાં—ખસ દફતરસે વાપિસ હોકર

મિરજખાં—રખસત હુએ

પ્યારી—મિરજખાં ખિયારે બહોત અચ્છે આદખી માલુમ હોતે હૈં

ખલીલ—બહોત અચ્છી આદત ઓંર ખાસકર મેરે વાસ્તેતો દિલોઝન સે મૌજુદ હૈ ( નાજરીન શામ હોગઈ ) યેહલોઝ ખાના બગૈર ખાકે ફારિગ હુએ હીથે કિ બાઝ આગયા; પ્યારીકાશી હમેશા ઈદમ મૌશુકસે શૌક રહાયા દેખતેહી કહનેલગી લો અબ કુછ સુનાવો બાઝ આગયા ખલીલ અહમદને બાઝ લેકર સુર દુરસ્તકિયા ઓર યેહ ગજલ શુરૂઆ કરદી

॥ ગજલ ॥

હસીન સારે જમાને મેં જો તુમસા હો નહીં સક્તા  
તે ઈન્સાન ખાવફાઈ મુઝસા કોઈ હો નહીં સક્ત  
બુલાનેપર હમારે ક્યા ખરે બનકર વોહ કહતે હૈં  
હય વાઈદા દુસરે સે આજ આના હો નહીં સક્તા  
ખૂબીસે ફેક કર તસન્વર અપની કહ રહે હૈં વોહ  
કયામતતક ખલીલ આહાતુમ્હારો હો નહીં સક્તા

ખલીલ અહમદ ને ગજલ કો તમામ કિયા ઝોર પ્યારી કી  
તર્ફ ઇશારા કરેકે અપ્પ જલ્દ તુમ સુનાવો  
પ્યારી ને બાદ ઇસરાર ગજલ શુરૂ કી

॥ ગજલ ॥

હમારે વાસ્તે ઉન્કી નઈ તાજર નિકલી હૈ  
કિ અદમિયત હાથ ગૈરૌંકે ખેહતાશકીર નિંકલીહૈ  
નહીં હોતા હય ખલી ખતભી ઉન્કા છેડસે ઐ દિલ  
જે ખોલાખત કો પડલે ગૈરકી તસ્વીર નિકલી હૈ  
યેહક્યોં ખેલે હૈં તુમને આજ અપને ગેસુએ પેચા  
કિસે પાખંદ કરને કે હિયે જાજર નિકલી હૈ

યેહ ગજલ ખતમ હોલીથી કિ મિજબાં આ મોજુદ હુએ  
કે બજે સતતકે સગત રહા બાદ કા હાલ ખુદાજને

**નવાં બાબ.**

લાયા હય મુદતકે બિખરુડે હુએં કો  
ઇલાહી તેરા શુકર ક્યોંકર અદાહે  
ખાના આબાદી

નાજરીન આજ ઉસરાતકો ગુજરે હુએ કરીખ એક સાલ  
યા ઉસસે જ્યાદા હોગયા હય જસરાત કો મજલિસ નિશાતો  
દુરખ છેડકર રૂખસત હુએ હૈં યેહ અમના લોગોંકા ઐસો

ਅਸਰਾਮ ਸੇ ਅਸਰ ਫੁਰਾਏ ਕਮਾਂਕਿ ਅਤੀਤ ਅਤਮਦ ਸਾਦਮਾਨੀ  
ਉਤਕਾਰ ਆਨੇ ਮੇਂ ਐਕ ਮਾਫ਼ਤ ਤਨਘਾਪਰ ਮੁਕਾਭਮ ਫੇਗਰੇ  
ਏ ਭੁਜਮੇਂ ਫੇ ਮਿਰਜ਼ਿਆਂ ਏ

ਅਜ ਈਸਵਸਤ ਉਸ ਮਕਾਨ ਚੋਂ ਫਾਹਿ ਨਹੀਂ ਹੈ ਸਿਫ਼ ਅਤੀਤ  
ਅਤਮਦ ਐਰ ਘਾਰੀ ਹੈ ਐਰ ਈਸ਼ ਤਰਤ ਧੁੰਦਲਾ ਫੇ ਰਹੀ ਹੈ

ਘਾਰੀ—ਵਾਹ ਕਥਾ ਐਸੀ ਆਤ ਹੈ ਕਿਰਤਾ ਅਪ ਮੁਕਸੇ  
ਮਘਤੀ ਰਖਨਾ ਆਫ਼ਤੇ ਹੈਂ ਕਥੇਮੇਂ ਭੁਫ਼ ਫੁਟੀ ਫੁੰ ਆਪੰਡਾ ਮੇਨੇ  
ਸੇਫ਼ੇ ਫੁਏ ਤੇ ਫੇਮ ਐਰ ਫੁਫ਼ ਅਜਪਰ ਮੁਫ਼ ਫੇਰ ਨਹੀਂ ਫੁਏ  
ਮੇਂ ਐ ਫੇਏ ਐ ਪੰਡ ਮਘਤ ਹੋਘੀ ਫੁੰ ਧੋਫ਼ ਪਫ਼ਤੀ ਰੀ ਆਤ  
ਨਹੀਂ ਫੁਏ

ਅਤੀਤ—ਫੁਏ ਫਾਰੀ ਨਮਾਭੁਮ ਤੁਮ ਅਪਨੇ ਫਿਰਮੇ ਫੇਰ ਮੇਂ  
ਕਥਾ ਕਥਾ ਅਘਤ ਮੇਂ ਭਨੇਨ ਸੇ ਫਾਤੀ ਫਾਰੀ ਮਾਰ ਕਥਾ  
ਫੁੰ ਤੁਮ ਮੰਝਮੂਰ ਫਰਤੀ ਫੇ ਧਫ਼ਾਂ ਧੇਫ਼ ਫਾਤ ਹੈ

ਫਾਰੀ—ਫਿਰਕਤ ਧਾਰਨ ਗੋਧਮ ਮੁਰਿਕਤ

ਅਘ ਮੁਫ਼ੇ ਅਫ਼ੇਰ ਫੀ ਫਰਨਾ ਪਫ਼ਾ ਅਤਤ

ਮੁਘਮਿਤਾ ਧੇਫ਼ ਫੁਏ ਫਿ ਰਧ ਫ਼ਰਵਰੀ ਫੇ ਅਘਾਰ ਮੇਂ  
ਮੇਨੇ ਫੇ ਫਾ

(ਅਘਮਰ ਮੇਝਮਰ ਸੇ ਉਫ਼ਾਫ਼ਰ) ਫੇਘਿਫੇਫ਼ਿਨ ਸਫ਼ਮੇਂ ਫਾ  
ਧੇਫ਼ ਫੇਫ਼ ਨਿ ਫਾਫ਼ਰ ਧਫ਼ ਫਰਫ਼ਿਨ ਤਿਘਫਾ ਫੇ ਮੇਰ ਫਾਫ਼ਮ

મિનિસ્ટર ખાલી જાવું. મહારાજ રંગભોરા કદમ્બાના કાગળ ૧૬ સાથે મેલા  
મંગા રત્નાન સે ગુમ દેવામાં દેવા.

હરચન્દ તલાશકિયા ચાર માસ સે જતા નહીં જો સાદામ  
મિશાન દેં ૫૦) રૂપે નજર કરે.

યેહ પઠકર મેને મુના સિખ સમગ્રા કિમં અપની ખેરિમત  
વાલદેન કો ભેજદુ યુતાયે મેને અસત્ર બેહુયા બનકે સિખકિયા  
ઝાર અર્જ કાશ ન કરને કી સખત તાકીદ કરી હય મુના-  
ચે: હસપર અમત હુવા યેહ પઠાં પર આકર મુઝકાં સહી ન  
સાલિમ દેખાયે.

આજ યેહ ખત-(ખત નિકાલ કર) આયા હય તુમ્હારે  
બડે ભાઈને રહતતકી હાય મેરા ભાઈ મુઝપર બડા મહર ખાત  
આ મુઝમે જન્મનકુત તુમમે ગણતકુતન અપતક બહિર ન  
કિયા અફસોસ અફસોસ રકકર..... ખેર જો કુછકો  
અમ કયાં છુપાઈ દેજો. એકખત સે મહુર હુવકે તુમ્હારે  
વાલદેન મે તુમકો મુકયા તૌરસે પકોત તલાશ કિયા.

ઝેર તુમ્હારે ગમમે એક માહકે આગે પીઠે રહતત  
કરગયે ખેર ખ્યારી અમ સત્ર કરના ચાહિયે બહુજ સખર  
કે કયા ચરાહૈ યેહ દિન અમકો નસીમ હોતા હૈ નીચે ખત  
મેં વાલિદ સાદામ યેહમી તહરીર ફરમાતે હય અમ બહુજ  
તુમ્હારે મેરા ડોન હૈ ઝેર મેરી જાનગીકા કુછ કયામ નહીં

લિહાજ અખ તુમ અપના ધર સલાવો. ઝોર ખા કાયદા નિહાહ કરેકે ઐશસે જીન્દગી ખસર કરો અખકત મેને મશહુર કરકખા હય કે અપતે મામૂલ પાસ દિહલી મેં હય અગર તુમ કહોતો મેં આકર તુમ્કો લેખજી અખ મેં તુમ્હારી મરજીદેખ તાહું કે ક્યાહૈ જવાખ ક્યા લિખું

પ્યારી—હાય વાલિદલી ગુજરગયે ખૈર મેરે વાસ્તે ઉસીકિન ગુજર ચુકયે જીસદિન મેં અલી ગઢકા ખેરવાહ કહકર ઉસ તર્ફ રવાના હુઈ

અખતો મેં હરતરહ તૈય્યારહું આપ જરૂર લિખલી જયે કે આકર લેખવેં ક્યોંકિ ધસ તરહ કલતક ખસર હોગા મગરમહ જરૂર લિખલી જયે કે મેરે અસ્ત હાલસે કિસી કા આગાહ નકરેં

ખત્રીત—યેકતો ઉન્હોંને ખુદહી લિખદિયા હૈ ગરજ કે ખત લિખદિયા ઝોર મુંશી અતાહુસૈન સાહખ તીસરે દિન મય મામાન આ મૈબુદ હુએ ઝોર પ્યા કોતો ઉરસ ખનાકર અજમ અલીગઢકા કિયા પીયારી ખત્રીત કરેકે હસીના નામ રખ્યા ગયા અતાર હુસૈનખી હુખા મિસ્લ ખલીત અકમલકે ખુખ સૂરતી દેખકર ખડોત ખુશ હુએ અલીગઢ આત પહુચે અકલે દરબાર જૈ જૈકે મુખારહ ખાલીકો આરહ થે તમામ ધર મુંશી આતા હુસૈન સાહખ મસ્તૂરાત સે બરાયા ફલહન કી રતુમાઈ હોતી ખત્રીતી

ખારી ઈસ્લામી લિખાસ પહેને હુએ દર હકીકત ઈસ્મવા મુસ-  
મ્મીવનીથી કુછ અસે મેં સાસ ઓર મુસરે કે દિલમે  
હસીનાને અપની ખુશ હકૂમી સે દિલમે ધર કરલિયા ઓર  
ઓર સખમે દેહલી વા લી મશહુર હોગઈ

નાબરીન—ઈસ શમાઅ ખરાશી કી માફી માગ કર હમ-  
જા સત હોતે હું ફિર મિલેંગે અગર ખુદા લાયા

આજિજ અબ્દુલ શમદ

ચે નોવેલે તમામ હુઈ.

ફરજંદકો પીદરકી નસીહત.

એક શખ્સને અપને બે-વકુફ લડકેકો નસીહત કી, કે  
અય ફરજંદ ! જો ઔરત સામને આવે ઉસે નઝરે બહસે ન  
કેખના, જોગંડે જો ગયેર ઔરત હો, ઓર વોહ વોહ છોટી  
હો, તો વોહ બેટીકી ખરાખર હો, ઓર ખરાખર ઉમરકી હો, તો  
વોહ બહેન સમજના, ઓર જો બડી હો, વોહ માં હો લડકા  
જો અકલમંદ થા ! વોહ ચે મુનકર ચુપ રહા, જખ ખાપને  
ઉસકી શાદી હહરાઈ, તો ઉસને કહા, અય પીદર યુઝુર્ગવાર !  
આપ ચે ફરમાઈયે, કે મેં શાદી કીસસે કહંગા ! બેટીસે યા  
બહેનસે યા માસે !

## જુતીયોંકા તુફલ.

લખનકો એક શોહદને એક ઢાં રઈસોંકી હાથવત કી,  
જમ લોગ ખાને લગે, તો શોહદને ખજને ખુદ રઈસોંકી  
જુતીયાં ઉઠા ઉઠાકર એક કાઠડીમેં રખના શુર કીયા. જમ  
લગ લોગ જમા હોગયે, તો જુતે ફરોખત કરકે બાઝારસે  
દાખવનકા ઈતેઝામ કીયા.

એક રઈસ-મઝી માશા અલીદ ! હુસ્ને ઈતેઝામકી તાઅ-  
રીફ નહીં હોસકતી.

દુસરા-મેશક ! તાઅરીફ નહીં હોસકતી, ઝોર દસ્તર  
ખાનસે બી બહોત તકલ્લુફ કીયા હે.

ત્રીસરા-ખાનેબી બહોત મઝેદાર હે.

શોહદા-યે સખ હુજુર હીંદી જુતીયોંકી બ-દોલત હે ઝોર  
હુજુર-હીંદી જુતીયોંકા સદકા હે !

લોગ જમ રખસત હોને લગે, તો કીસીકા જુતા નથા.  
ઈસલીયે અપને મકાનસે મંગવાકર ધર સીધારે.

બે-ન માઝીકે હાથકા ખાના ન ખાના.

મંદ સાહેબોંકા બેકે મુત્ત-તકી પરહેઝગાર થે, ઉનકો સફ-  
રકા ઈતેફાક હુવા. અસનાયે રહામેં એક ગાંઉકે નજદીકે સાખ  
હુઈ, તો કયામકી ઝુરરત પડી. જમ ગાંઉમેં પહોંચે તો

માયલુમ હુવા, કે યહાં ન કોઈ મરાજીદ હો, ન સરાયે. અબ  
હાં બચે ! સખસે બડી ફીકર ચે હુઈ, કે પાસ ખાના મૌબુદ  
શા. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા પકા હુવા ખાના છુતે તક નહીં  
ચે. બહોંત તલાશડે બાદ માયલુમ હુવા, કે ઈસ ગાંડિમેં સીદ્દ  
એક બેવા મુસલમાન ઓરત નમાઝી હો. ચે સાહેબ બડી ખુશી-  
સે ઉસડે મકાનપર ગયે, ઓર કેહને લગે, કે હમ પરદેસ્તી  
મુસફીર હૈ. ઓર યે—નમાઝીકે હાથકા હમ કુછ નહીં ખતે,  
આજ તુમ હમારે વાસતે ખાના પકાદો, તો બહાત એકસાન  
હોગા. બેવાને મંજુર કીયા, ઓર ખાના ખીત્રાયા, ઓર અપને જુ  
ધરમેં ઠેહરનેડા જગા દી. બેવાકો મગરેબકે વક્ત નમાઝ અદા  
કરતે દેખા, મગર ઉસકો વુજુ કરને નહીં દેખા. તો ઉનકો  
ખ્યાલ હુવા, કે શાયેદ ઈસકા વુજુ અસરકા હોગા. બેવાને  
ઇશાકે વક્તખી ખીત્રા—વુજુ નમાઝ અદા કી. તો ઉનકો ખ્યાલ  
હુવા, કે ઈસકા વુજુ ખતા નહીં હુવા હોગા. લેકીન જબ ફજ-  
રકો ઉઠકર બેવાકો ખીત્રા—વુજુ કીયે નમાઝ અદા કરતે દેખા.  
તો ઉનસે રહા નગયા. પુછા કે ઈસકી ક્યા વજેહ હો, કે તુમકો  
મગરેબસે અખતક વુજુ સરતે નહીં દેખા. બેવાને જવાબ દીયા,  
કે મેરે ખાવીંદો મરે હુયે પુરે દસ બરસ હુયુ, જબસે મેરા  
વુજુ આજ તક નહીં દુટા ! હઝરતને લા—હોલ પરહકર કહા  
કે તેરી નમાઝ ભલી હો, બેવાકો ચે ખાત ખુશી માયલુમ હુઈ.



ઝાર કેહને લગી, કે લા-હોલ અપને ધર બકર પડે. બે તુ-  
મ્હારી એરેઓંકા વુઝુ હુટે ! ઝાર ગાંઉકે નંબર દારસે કેહકર  
ઉનકો નીકલવા દીયે, કે યે બદ ચલન હે !

### મતલબી અંધા હોતા પે.

એક ઠાકર સાહેબ દો માર ગાંઉકે જમીનદાર થે, ઉનકા  
એક ચમારી પર દીવ આગયા, મોકા હુંડતે થે. એક રોજ  
ચમારીકો તનહા ઉસકે મકાનમેં આટા પીસતે દેખા, મોકા  
અછછા તનહાઈકા હાથ આ ગયા. ચમારીકા હાથ પકડ લીયા  
ચમારીને જખ દેખા, કે બેબસીમેં ઈજજત બીગડતી હે, તો  
ખંદા—પેશાનીસે ઠાકર સાહેબસે કેહને લગી, કે ઈસ કદર  
મોકી તલાશકી ક્યા ખુરત થી ! ખુઝે સાફ કેહહેતે, મે ખુદ  
રજામંદ થી. દેખો આટા વગેરા મેરે હાથેમેં લગા હે. ઉસકો  
ધો-ધાકર સાફ કર આઉં, અગર ચકીકા આવાઝ ખંદ હો-  
અયેગા, તો ધરકે લોગોંકા શુખા હો અયેગા, ઈસલીયે તુમ  
ચકી પીસો, મેં હાથ મોંહ ધો આતી હું. ઠાકર સાહેબ  
ચકી પીસને લગે. ચમારી ધરમેં ગેધ, ઝાર અપને બાપસે  
મે કીરસા કહા, બાપને લડકીકો રોક લીયા. ઝાર ઠાકર  
સાહેબકે બાપસે બકર શીકાયત દીયા, ખેર સુખુતમેં ઉનકે  
લડકેકા ચકી પીસના ખતલાયા. જખ ઠાકર સાહેબકે બાપને

આકર વાકઈ ચે હાલ દેખા, તો ઉસ પર બહોત ખશ હુયે, કે રચાયા કયસી તામેદાર રહેગી ? લડકેને જવાબ દીયા. કે અબસી રચાયા તામેદાર નરહે, તો કયા કરું ? આટા પીસ-કર તો ખીસાતા હું !

ન બાસી બચે કુત્તા ખાયે.

એક સાહેબ અપને અજીઝકે મેહમાન થે, બવકતે સુન્દો, મેહમાનને સાહેબે-ખાનાડી ગયેર હાઝરીમેં નોકરોઢા કહા, કે કુછ બાસી ખાના અગર હો, તો લે આઓ, નાશતા કર હું. નોકરને બે-સાખતા જવાબ દીયા, કે કિબલા,ય હાં તો ચે ફસ્તુર હે, કે ન બાસી બચે ન કુત્તા ખાયે. ખિચારે મેહમાનકો બહોત ખીજાત હુમ, ઓર ખામોશ રેહ ગયા.

મલેકલ મોતકા ઘોડેમેં ચાના.

એક બુઝુર્ગકે મકાનમેં દો શખ્સ એકહી નામકે આકર મેહમાન રહે. દોનોં બરાબર ચાર પાઈ ચોંપર સોતો થે, દોનોં સાહેબોંકે નામ અબદુશ-શકુર થે. ઇતેફાકસે ઉનમેંસે એક સાહેબ સખ્ત ખીમાર પડે, જબ કે એક દીન ઉનકી હાલત બહોત નાજુક થી. તો દુસરે અબદુશ-શકુર અપની ચાર પાઈ ઉઠાકર ચલદીયે. ઓર ઉસ જગે સોના ઘોડ દીયા. જબ

किसी दर्याईत डीया म्युं भोसवी साहेब, आपने यहाँ सोना  
क्युं छोड दीया ? भोसवी साहेब बोले, पात ये हे, डे मुझ  
यकायेक ये भ्यास पयदा हुवा, डे हम दानों हमनाम हें, आर  
अज दूसरे अजदुश-शकुर करी मुस मर्ग हें, मुमकीन हे, डे  
मवेकल भोत घोडेमें जजये उनके मेरी इह कज्ज करे !

---

छपाके धजहार करनेवाले

हुसेन मीरजा जुकसेलर,

करीरोड, पोस्ट नं० १३, मुंजध.

---

आ पुस्तक अनंतदास रामदासीने छापा, साभतनुं आल  
जोरक्षु मुद्रशासकभां छपान्युं.

# ઈધરબી તો દેખો

અલેક લેલા હબર દારતાન રૂ. ૪	શાહીદ કરમલા	૦-૧-૦
દારતાન અમીર	સુબોકા ગીતારા	૦-૪-૦
હમમ ૨-૮-૦	શાહાદત નામા	૦-૨-૦
દાતમનાઈ ૭ મવાલ પુરે રૂ. ૧	સમાવત નામા	૦-૨-૦
રોજતુરસોદા માને ૧૦ મજલીસ ૧	કીસ્સા ગુલમાનોવર	૦-૫-૦
જગનામા મોહમદ હનીફ રૂ. ૧	ગુલઝરે પંજતન	૦-૩-૦
કિસ્સા મુલખકતવી ૦-૧૦-૦	કી.હાલમા ગલોરીશાહ	૦-૩-૦
કિસ્સા સોતા કલાની ૦-૧૦-૦	નાજની પાન ખાતસરી	૦-૩-૦
કિસ્સા મુલુદ બુલેખાં ૦-૧૨-૦	કીસ્સા ચાર હંવેશ	૦-૧૦-૦
આદમહીલ હીસ યાને	હીસિતલ મુસલેમીન	૦-૮-૦
ગુલામર હુદી ૦-૧૦-૦	હુજુતુલ દીસલામ	૦-૨-૦
કિસ્સા ફસાને અબાયમ યાને	વફાતનામા શાહીનામા	૦-૨-૦
અન્નુમનઆરા ૦-૧૦-૦	ખુદાદી રહેમત	૦-૨-૦
કિસ્સા મલેક મોહમદ આર	તારા ખુરશીદ	૦-૪-૦
પરીગેતી અફરોજ ૦-૧-૦	કીસ્સા હલીમાદાદ	૦-૨-૦
લેલા મજતુ ખાતસવીર ૦-૪-૦	નોવેલ જવાન બીગી	૦-૧-૦
કિસ્સા તમીમ અન્શાની ૦-૩-૦	મશતવી બેહેરે ઈરફ	
મોલુદ મુલઝરે જન્નત ૦-૪-૦	ખાતસવીર	૦-૮-૦
કિ.જેતુન મોહમદ હનીફ ૦-૩-૦	નોવેલ પિયારીકા આશક	૦-૪-૦

આશાંકી બુલબુલ	૦-૨-૦	રત્નડીવાળકી હરદાસ	૦-૨-૦
હરીશાંકી બુલબુલ	૦-૨-૦	આશાંકી બુલકી ઇંદ્રાદ	૦-૨-૦
નીલાંકી બુલબુલ	૦-૨-૦	આશાંકી બેલકી	૦-૨-૦
રત્નડીવાળકી બુલબુલ	૦-૨-૦	ગુનચે કવવાલી	૦-૨-૦
નાગે બુલબુલ	૦-૨-૦	કલાંકે દાગ	૦-૨-૦
ગુલબુલકે કવવાલી	૦-૨-૦	કલાંકે અમીર	૦-૨-૦
ગુલબુલકે મલીના	૦-૨-૦	નરકીપૂતલી હુરેઆરખ	૦-૨-૦
કીરકે વનના	૦-૨-૦	ગુલબુલકે લટકી નાટક	૦-૨-૦
બેલીના બેલખન	૦-૨-૦	ગુલબુલકે ગેલકી	૦-૨-૦
રત્નડીવાળકી બેલકે	૦-૨-૦	આતસી નાગ નાટક	૦-૨-૦
રત્નડીવાળકી હુલખત	૦-૨-૦	ગુલબુલકે નાગ આતસવીર	૦-૨-૦

✽ અંતરે દરેકા. ✽

ખરીશાંકી કીતાબે બગાડે વગન અપના પુરા પતા ચાને  
નામ-મુકામ-રોટ જાણા હટકુસે હે. યા મુલરાતી હીંદીમે હે.  
યા હીંદીમે હુરકેમિ કીખતા ચાહુમે ખત સાફ ન લીખનેમે  
હસ ખતકા માલ યા જવાબ નહીં બેજા ખતા હે.  
આર ૧ રૂ સે કમકા વી. પી. કીસીકા બેજા નહીં ખતા.

હરદીસમકી કીતાબે મીલનેકા પતા:—

**હુસેન મીરઝા બુકસેલર,**

કરીશાંક, પોસ્ટ નં ૧૩, મુબઈ.

